मिनखपणा रौ मोल

•

वखाणणवाला

पंडितप्रवर श्रद्धेय मंत्री

श्री पुष्करमुनिजी महाराज

★

संपादक

श्री देवेन्द्र मुनि, शास्त्री साहित्य रत्न

•

- रूपान्तरकार
  नृसिंह राजपुरोहित, एम ए

- प्रकाशक
  सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जोधपुर

- द्रव्य सहायक
  सेठ धनराजजी बिनाकिया खण्डप

- पुस्तक प्राप्ति स्थल
  [१] भण्डारी सरदारचन्द जैन बुकसेलर
  त्रिपोलिया बाजार जोधपुर
  [२] सेठ धनराजजी बिनाकिया
  मु पो खण्डप जि बाड़मेर

- प्रथम प्रवेश
  १९६४

- मूल्य
  एक रुपया

- मुद्रक
  साधना प्रेस, जोधपुर

कठै काई है



दो आखर

मिनखा री जीवण आज घणी घणी री समस्यावां सूं उळझ्योड़ो है। आपसी वैर, विरोध अर कळै री होळी सुळग री है। जुद्ध री काळी छाया सारी दुनियां रै सिर माथै मंडराती रैवे है। आज देस दुखी है, समाज दुखी है अर मिनख परेसान है। कठैई अमीरी-गरीबी री समस्या है तो कठैई ऊंच-नीच री भेद भावना है। कठैई तरक्की रा नाम पर भोग रा साधन बधै है तो कठैई थोथी परंपरावां अर झूठी रूढ़ियां रै पाण बरबादी हो री है।

दुनियां रा धाराऊ आज धूंधळी है, अणु अस्त्रां रूपी काळी बादळ छप-रायोड़ी है। न जाणै किण वखत आग मांड जावै अर संसार री सत्यानास कर देवै। पूरी संसार आज घर घर भूजतो थको काल रा किनारा पर ऊभो है।

इणरी खास कारण ओ है के मिनखां भौतिक विकास में तो खूब आगै वधग्यो है पण आध्यात्मिक अर नैतिक विकास में घणो लारै रैग्यो है। इणी पंगली हालत में मानवता घबरावै है अर दानवता जोर कर री है। मिनख तो रै है पण मिनखपणो भाग्यो है।

इसी अबखी वेळा में भारत रा एक त्यागी संत री सिर ऊंचो कर आदमी बाणी री ओ बैण जो न कोई कहै है अर न कोई सुणै है मूंगा अवस्था मानखा नै सही मारग बतावैला। बाणी रा तत्त्व में पड्या मिनख नै सांति रा दरसण करावैला। 'मिनखपणा री मोल' मानखा रै जीवण सूं तालुक राखण वाळी एक अमर वाणी है। आ एक इसा संत रै मन सूं फूटी है, जिणां री चरित्र निरमल अर जिणां री दरियाव री पाप अथाग है। जिणां रै पावन रूप रा आखरं इणरी वचनां री रस आमण री मीठी जिलपो है वे आगी तो मानै है के आपरा अमोलक वचन जिण मन सौरा रन पर असर करै अर सुधार करणवाळी रचनावां री भीड़ नै चितरांम बणाय दे पण जिण नै भी सांतेरी अवसर नी मिळ्यो है, वारै सामी आ अमोलक पोथी 'मिनखपणा री मोल

है। इणनें आपनैं प्रवचनकार श्रद्धेय मंत्री पुष्करमुनिजी म० री विद्वत्ता अर अमरवाणी रा परतख दरसण होसी। इणरै सागै भासा री सजीवता, भावां री गंभीरता अर सैली री विमलता आपरो मन मोय लेसी। आपरै हिवड़ा रा तार गतै ई अध्यात्मराग ऊठसी अर कैय देसी के इण प्रवचनां में भारतीय सस्क्रती री आत्मा परतख बोल री है।

श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री री जोधपुर सिरखा वास लय रै वास्तै वरदान साबत हुओ। इण सिरखा वास में रैने ई आपरा प्रवचन सुणण री सोनैरी अवसर मिलयो। म्हूं मैंय सरू सूं मुनिश्री रा ओजस्वी वचना है अर आपरा विचार अणोट वैग्यानिक है। आप अबखी सूं अबखी बात नैं सरल अर सीधी भासा में समझावण री पूरी माहरी राखै, जिणसूं सुणणियां रै मन पर आछो असर पड़ै। आ पोथी जैन अर अजैन सगलां रै वास्तै एक सरीखी ग्यान देवण वाली है। म्हूं उम्मीद करूं के इणनै पढ'र घणा सूं घणा लोग लाभ उठासी।

इन्द्रनाथ मोदी
(न्यायमूर्ति, राजस्थान हाई कोर्ट)

सम्पादक रा दो बोल

श्रद्धेय सद्गुरुवर्य श्री पुष्कर मुनिजी म० रै इण प्रवचनां री संग्रह सब सूं पै'ली हिन्दी में 'जिन्दगी की मुस्कान' रै नाम सूं छप्यौ। इण संग्रह नै समाज में आछौ आवकार मिलयौ। मोटा मोटा विद्वानां अर पत्र पत्रिकावां इणरी खुला मन सूं तारीफ करतां लिख्यौ के अै प्रवचन जमाना री मांग रै माफक है अर आवण वाली पीढ़ी नै पण सही मारग बतावण वाला है।

इणरै पछै आ इज पोथी गुजराती में 'जिन्दगी नो आनंद' रै नाम सूं निकली अर निकलतां पाण गुजरात री संस्कारी जनता इणनै हिया छाती पर चढ़ाय ली। इणसूं औ साबत हुवै के पोथी समाज रै वास्तै घणी काम री है। जे इण री रूपान्तर प्रान्तीय भासावां में कियो जावै तो घणा सूं घणा लोग इणरूं प्रेरणा लेय नै आपरौ जीवण सुधार सकै। फलस्वरूप इणरौ औ राजस्थानी रूपान्तर 'मिनखपणा री मोल' आपरै हाथां में है। राजस्थान री दो करोड़ जनता जिकी आज आतम भोजन उठण री कोसिस में है, आपरी मायड़ भासा में इसा सुन्दर विचार पढ़'र उणसूं लाभ उठासी इसी म्हनै पक्की उम्मीद है।

जैन धर्म हमेस सूं आपरै सिद्धान्तां री प्रचार जनता री बोली में करतो आयो, इण कारण इज वो प्रजा रै हिया में आसानी सूं उतर सक्यो। जन-जागरण रै वास्तै जनवाणी एक साधन अत्यन्त है अर आज रा जुग में पण आ बात जिसी री तिसी इज जरूरी है। इण कारण इज मैं प्रेम सूं तैयार कियोड़ौ औ राजस्थानी रूपान्तर आप सांई पूग सक्यौ है।

म्हारी जाण में आधुनिक राजस्थानी गद्य में कोई जैन संत री आ सबसूं पै'ली रचना छप री है, जो राजस्थानी भासा अर संत परंपरा रै वास्तै पण एक गुमेज री बात है।

रूपान्तरकार श्री नृसिंह राजपुरोहित, एम० ए० आधुनिक राजस्थानी गद्य रा एक आछा लेखक है, जिणां पूरी मैं'णत सूं औ रूपान्तर कियौ है।

जैन स्थानक
गुलाबपुरा (राज०)

देवेन्द्र मुनि

एक ओळखाण

इण पोथी रै द्रव्य-सहायक श्री धनराज भाई रौ जनम सं० १६७६ में भादवा सुदी ६ नै महाराष्ट्र में हुवौ, पण यां रा वडेरा अर श्रे पातै साटप (जिला बाड़मेर) राजस्थान रा कायम रैवासी है। सरुपोत री सिक्षा भाउप गाम में इज हुई, पण उण मामूली सिक्षा रै बल सूं हिम्मत अर तकदीर रै पांण संवत २००६ सूं श्री धनराज भाई नंदुरबार (खान देस) में श्री कसनलाल धनराज साह री फरम रै नाम सूं इमारती लकड़ी रा एक मोटा वपारी है। फरम री साखावां नवापुर, सोनगढ अर वगाई में पण है। आप एक आछा सुधारवादी अर समाजसेवी विचारां रा आदमी है। अबार इण दिनां में इज आप केई लोकोपकारी कामां में जिकौ पैसौ खरच कियौ है, उणरौ आंक लग-भग तीस हजार री है। इण पोथी खातर पण आप एक हजार रु० सहायता सरूप दीना है, उम्मीद करां क लोकोपकारी कामां में यांरी रुचि वणी रैवैली।

नरसिंह राजपुरोहित



सेठ धनराजजी बिनाकिया

मिनखपणा रौ मोल

**

मिनखपणा रौ मोल

दुनिया में आज सबसूं बडौ तोटौ मिनखपणा रौ है। श्रो इज कारण है के इण बीसवीं सदी में मिनखपणा पर बहोत ज्यादा सोच विचार कियौ जाव। दुनियां री हर मुल्क, हर प्रांत, हर समाज, हर धम, हर पंथ अर हर सम्प्रदाय इण बाबत सोचें। खास मुद्दा री होवण सूं मानखा रौ ध्यान इण कानी जावणौ श्राजवन्ज है। उणरौ चिंतन मनन अर सवण मानखा री रळम्पाछी गूंठळियां न सुळझावण में लागणौ इज चाहिज। संसार म सगळा मुल्कां री थरपणा मिनखपणा री नींव माथ इज होवणौ चाहिज। आ बात आज सगळा समझदार मिनख एक सुर सूं कय है।

सवाल रुठ सक के श्राज रौ मिनख मिनखपणा बाबत इज इतरौ क्यूं सोच ? दुनियां म दूजी भी तौ कई चीजां है— धन माल है, सुख संपत है, भोग विलास है। पण इण सगळी बातां न छोड न फगत मिनखपणा पर इज इतरौ ऊंडौ विचार करण री आज कांई जरूरत पड़गी है ? मिनखपणो इसो कांई

चीज है के जिण रै विना आपण आचार विचार री रथ-जात्रा जीवण र मदान मे पूरी नीं होय सक ? श्रो इसो कुणसो परगास है के जिण बिना मन मंदिर मे घार अघारो छाय जाव ? मिनखपणो इसो कुणसो सगीत है क जिण विनां आपण जीवण री वाणा वाज नी सक ? मिनखपणो इसी काई अमोलक वस्तु है के जिण बिना मिनख आपर लक्ष बिंदु ताईं पूग नी सक ?

इसा अल्सा सवाल आज मानखा र मन मं घूम है। वांरा पडुत्तर ढूढणा पडसी, इण बिना छुटकारो इज नी है, नी तो मानखो घात जोखम मं पड जावला।

आज रो जुग सही अरथा मे कळजुग है। वग्यानिवा री किरपा सू आज पावड पावड कठ चारखांना मोजूद है। धरती सुरग बण रही है, अर मानखो मोजा मार रह्यो है। टूटी खोलतां पाण गगा जमना री निरमळ धार उणरी चरण-रज धोवण न तयार रव, बटण दबावतां पाण घमचमाट करतोडो उजाळो उणनै अधकार सू उबार लेव। उणरी आख्यां इतरी मोटी व्हैगी है के वो अठ बठ्यो-बठ्यो हजारा कोसा दूर री चीज देख सक है, उणरा कान इतरा लाबा व्हैग्या है के वो लाखा मील दूर रा बाल घर बठ्यो सुण सक है, उणर पगां म इतरी गाढ आयग्यो है के वो लाखा करोडां मील री जात्रा जळ, थळ अथवा आभ म सपाटा सू कर सक। उणरी पहुच फगत धरती लग इज नी पण चदरमा अर नखतरा ताईं है, उणरा मगज म सकडां ग्रथ पचावण री ताकत है, उणरा हाथ हजारा मिनखा री कांम

एवला इज करण लाग्या है, धरती माथ [illegible] सीर जग बणगी है इण तरै सू मानवै माथ [illegible] फूक नै मुरग रा दवतावां तक न चमेज द दीनी है। [illegible] री पूठ मिळ जावण सू ससार री नास अर [illegible] री मूठचा म बधग्यो है।

यार तो मानव मुग्ग रो वैभव विन्दर नाच्यो है पण [illegible] उण बदई आपरा अदरूणो भावो देख ग ठकनीर [illegible] है? हिरदा री धडकणा न गिणण री, मन रा [illegible] नापण री अर बुद्धि री पोदा न परखण री [illegible] कीवो है? काई मानखा न उठ सुख री सगीत [illegible] न मिळो है? काई उण बदई मा ई जा[illegible] कीवो के इण मुग्ग री सहनाइया र सार [illegible] हाहाकार छिप्याडो है? चणर हिरदा, मन [illegible] असाती री ज्वाळामुखी धधक रह्यो है, वी [illegible] रा वभव न कितरा दिन टिकण दवला? [illegible] आत्मिक सुदरता री रूपडो कितरा [illegible] रय सकला? जठा ताई मानखा र मन [illegible] नही गाज, हिरदा म ग्यान रा सहनाई [illegible] भौतिक प्रगति, धारला वभव अर [illegible] फूतरा बरोबर इ कीमत नी है। [illegible] माग्ग काटा स भर राग्यो है इसर [illegible]

समस्यावा रा असली समाधाना न एक कानी राखन नवली समाधाना री गूंज गळी मे राजी व्है रहयो है। अपण जीवण रो विधाता, मिनख, आज पोत इज जीवण सू हार चुक्या है। उणर मायन सगळो वभव मोजूद ह पण वो कस्तूरी मिरग र ज्यू वैभव न बार खोज रहयो ह। उणरी हार रो कारण, उणर स मुग ऊभो ओ मानव जगत इज ह जिणन वो आछी तरै सू समझ नी सक्यो ह। आज मिनख मिनख न जडामूळ सू गमावण म लाग्योडो है, आदमी आदमी र बासत माथा फोडण रो कारण बण्योडो ह मिनख मिनख र वासत खतरा रो कारण बण्योडो ह, मानखा रो मिनखपणा पर सू विसवास उठतो जाय रह्यो ह अर मिनख मिनख र वासत भय रूप बणतो जाय रहयो है। मानखा रो मन आज आसकावा रा बादळा सू घिरयोडो है युद्ध रा भय स डरयोडो है। एवरेस्ट री चोटी ताई पूगण वाळा मानखा रा पग आज मानखा री झूपडी ताई पूगण म थाक रहया है, सोने रा आभ म उडण वाळा मिनख न आज धरती सू नफरत होवण लागगी है। सगळी धरती उण न काटा सू भरी दीख री' है। महावीर, बुद्ध, राम, क्रिस्ण इसा मसीह अर गाधी री बाता न आज वो फालतू बकवास समझ रहयो है। स्वारथ रा चानणा मे आज परमारथ उणरी आख्या सू अदीठ व्हैग्यो है। दुनियां रा पूरी मानखा जात रो भाग आज रूस अर अमरिका र साग बधग्यो है। तर तर रा वितडावादा र रोळन्ट मे मिनख आज मानखा री अदरूणी आवाज न भूलतो जाय रहयो है। वारलो वभव सागर रो पाण वढ न आज मानखा रा पग पखाळ रहयो है, छतां पण अचभा

रा बात आ है के सुख सांति अर प्रेम री झरणो सूखतो निजर आय रह्यो है। अपणायतपणा री फुवारो आज मंद व्हैतो जाय रह्यो है।

जिको मानखो आज धारा सूं फूलतो फळतो दीस यो मांय न सूं मुरझीज रह्यो है। उणरै दिमाग री ताकत तो बधती निजर आय रा' है पण हिरदा री बठ घटतो जाय रह्यो है। मिनख तो जीव पण मिनखपणो मर रह्यो है।

मिनख रा रूप में आज हजारां, लाखां, करोडां जीव फिर रह्या है पण वां में साचा मिनख कितराक मिळ रा ? आ बात तो टका सही है क जठ मिनख में मिनखपणा री जोत बुझ जाव उठ अधकार इज बाकी रव, अर जठ अधकार है, उठ टक्कर है, उठ स्वारथ है अर उठ इज दुख है। भारत जिसा मुल्क में न धर्मा री कमी है अर न मजहबां री न साधुवां री कमी है अर न गुरुवां री। अठ न नेतावां री तोटो है अर न उपदेसका री। ताम पण सम्प्रदायवाद पंथवाद, पोथीवाद, जातिवाद, गुरुडमवाद प्रांतवाद अर भासावाद रा दानव भारत रा छाती पर मूग दळ रह्या है। इण इज दानवां भाई रा हाथां सूं भाई नै मरवाय नाख्यो पाड़ोसियां रा आपस म माथा फोड़ाय नांख्या, एक इज भारत माता र उदर में लोटघोड़ा लालां र बीच मे महाभारत मडवाय दियो। आपां हजारां टुकडां में बटग्या हां आपणा दिमाग में हजारां गांठां बणग्या है। आपण विचारां र ओछापण र कारण मिनखपणा रा टुकड़ा-टुकडा व्हैग्या है। आपाण सोचण री तरीको इज गळत व्हैग्यो है।

आपा कोई न पूछा—आप कुण हो ? तो वो कहसी—म्हूं हिंदू हूं मुसळमान हूं जैन हूं, पारसी हूं सिक्ख हूं या ईसाई हूं। जातिवाद री भासा में बोलसी तो कहसी—म्हूं ग्रासवाळ, हूं पोरवाळ हूं अग्रवाळ हूं, सेख हूं ढेढ हूं चमार हूं, धाबी हूं अथवा मोची हूं। प्रांतवाद री भासा में बोलसी तो कहसी—म्हूं महाराष्ट्रीयन हूं, बगाळी हूं बिहारी हूं पजाबी हूं, गुजराती हूं या सिंधी हूं। यीमा तरै रा न्यारा न्यारा नाम बताय देसी पण आ री कहसी के म्हूं मिनख हूं अर भारतवासी हूं। घणखरी सिक्षा सस्थावां में सांप्रदायिक सस्थावां में, जाति सस्थावां में, राजनैतिक सस्थावां में अर व्यापारिक सस्थावां में सब जग आ बेमारी घुस्योड़ी है। छोटा टाबर नै भी भान हुवै ही कै म्हूं फिसा सम्प्रदाय, जाति अथवा प्रांत रो निवासी हूं, पण माता पिता अर समाज रा लोग उणरै दिमाग में आछापणे रो सूत घुमाय देवै। उणमें सूं मानवता निकळ'र दानवता अर देव।

पण मिनखपणो तो इण सगळा भेदां सूं ऊपर उठ'र अभेद कानी लेजावण वाळी चीज है। जद आपा जातीय प्रांतीय, सम्प्रदायी राष्ट्रीय वगैर सगळी दीवारां नै लाघ'र आग देवणो अर साचणो सरू करै दस्या तद आपणा सगळा टंटा मिट जासी सगळी सकीरणता उड जासी, सगळा भेदां री दीवारां ढह जासी, मनडा मिळ जासी हिवडा जुड जासी, मन री मळ मूठ्या में थूक'र ठंडा दे जासी अर स्वारथ री ज्वाळा बुझ जासी। जद आपा युद्ध'र टुकडां में भेदा में अर

न्यारा न्यारा रूपा में दखा, आपण आपसी वर री ज्वाळा सुळगण लाग जाव। हिंदुस्तानी पाकिस्तानी न देख अर रसियन अमरिकन न देख नी देखता पाण किरोध री आग धध धण लाग जाव इम गो दावानळ सुळगण लाग जाव। पण मिनखपणा री पवित्र गगा में सिनान करता इज, मिनखपणा री ऊ'चो लं'रा हिवड़ा रूपा सरवर में उठता इज भेद री अ सगळी भीता एक एक करन ढह जाव। मानखो सुख अर सतोख री साम लयण लाग जाव।

मिनख अर मिनखपणा में उतरो इज फरक है, जितरो क दूध अर दूध गे बानल मे। जे आपन दूध पीवणो व्है तौ दूध काई बरतण अथवा बानल मे होवणो जरूरी है। जद इज तौ पी सकोला। ओ मानखा-सरीर दूध री खाली बोतल र समान है। जे इण में दूध रूपी मिनखपणो नी है तौ वो निकमो है। आप एक मोका री दुकान भाड़ा पर ले राखी है, उण में अलमारियां, सा केस, टवल, कुरसिया वगर सजाय दो है, ज्वलरी हाउस री साइन बोड (पाटियो) ई आप लगाय न्यो है, पण जे उण दुकान में कोई माल नी व्है, गिराक आव अर खाली हाथ पाछा जाव तौ दुकान एक घासाधड़ी है, उण सू न दुकानदार न फायदो है अर न गिराक न। इणीज मान आप मिनखजमारो पायो, सरीर न करारो घोर बणाय लियो, भात भात रा ग णा-गाठा सू ई उणन ओपतो बणाय दियो पण कोई मिनख आपरो पल्लो मट अर आप उणा नफरत री निजर सू देखो, उणरो अपमान करो, आप र सेठ

पणा री टॅटाई में आयन उणन दुतकार दो, सामरथ हायतो थवाई कोई न दुखी देख न ई आंग अगीठ कर देवो, आपरे हिरदा में मिनख ने देख न आणद री छोळां नी उछळे मिनख पर जात पांत अर सम्प्रदाय रा बारला लेबल देखन आपर हिवडा रा उफहता पग थम जाव तो कवणो चाहिजे के आपर अठ ई ऊची दुकान अर फीका पकवान वाळी बात है। आप मिनख तो हो पण आपर मिनखपणो नी है। मानखा सरीर रूपी दुकान तो आप भांत भांत रा फरनीचर सू सजाय राखी है पण मिनखपणा रूपी माल आपरी दुकान में नी है।

साधाणो आज मानखा री आ इज हालत हु रही है। विचार करो के काई आदमी बखाण सुणण न इण बखाण पडाळ म आवणो चाव तो वो दरवाजा सू इज मायन आय सकला, क्यूक मायन आवण री ओ इज तो मारग है। जे आवण वाळो ओ विचार कर के म्हू दरवाजे सू होय न आंय न ना आवू अर यू इज सीधो पूग जावू तो काई वो अठ पूग सकला ? नही, उण हठीला मिनख री माथो भीत सू आफळ न फूट जावला अर वो अठा ताई पूग नी सकला। ठीक आ इज बात धम रूपी भवन में पूगण बावत कही जाय सक । जठा ताई उण रे दरवाजा रो ई पतो नी लाग, कोई मायन कीकर पूग सक ? हा तो धम रूपी भवन म पूगण रो दरवाजो मिनखपणो है। जठा ताई जिंदगी मे मिनखपणो नी आवला, उठा तांई धम रूपी भवन म पूगण री वात फिजूल है।

मिनखपणो नी होवण रा हालत में धम रूपी फूटरा भवन में पूगण री पुरजोर कोसिस रो ई कोई काम नी लागला ।

आज सू २५०० वरसां पली भरतखड रा महामानव स्रमण सिरोमणी भगवान महावीर आपरा पेना बखाण में आ इज बात बताई ही । उणा परमायो हो क—धम, साधपणा अर स्रावकपणा रे पर्ला मिनखपणो होवणो चाहिजे । उणां ससार री च्यार दुरलभ चीजा में मिनखपणो सब सू दुरलभ बताय न ससारी जीवा ने उपदेस दीनो ह—

चत्तारि परमगाणि दुल्लहाणी य जन्तुणो ।
माणुसत्त सुई सद्धा संजमम्मिय विरियं ॥

उत्तराध्ययन-अ ३ गा० १

इण ससार रा जावा वासत च्यार चीजां घणी दुरलभ है । उण में सब सू पैली है मिनखपणो धारण करणो, उणर पछ बारी वारी सू स्रवण सिरधा अर सजम में बळ लगावणो । जे सब सू पली चीज मिनखपणो नी आयो तो लारला सगळी चीजां उणसू हजारां कोसां आघी है । आज सगळा मिनख भौतिकवाद री धारा में बह रह्या है । कचण अर कामणी रा चितवणा में चकरीज रह्या है व मिनखपणा नै छाड नै आग वधण रा तरवळ कर रह्या ह वान भगवान महावीर र इण वचना सू ग्यान लवणो चाहिज । आज रो मानखो कोई भी धम रो कठावध भण न मन ■ गरब राख, कोई भी सम्प्रदाय र किरिया-करमां री आगर ऊभो कर न पोता न धर्मात्मा मानतो थको मन में सतोस मान, साधु अर स्रावक बाजण में इज आपर जीवण री पूरणता समझ । पण जोवण री असली चीज तो मिनखपणो

ह, वो नी आयो तो उण री सगळी मणत कात्यो पींज्यो कपास ज्यूं ह जासी। जिंदगी में बरसा तांई धोटा घुमावण में काईं सार नी ह।

जे किणईं मिनखजमारो तो पाय लियो पण मिनखपणो नी आयो तो ग्यानियां री निजरां सूं उण जमारा में धूड़ ह। मिनखजमारो तो एक चोर न ईं मिळ्यो ह, जो इण अमोलक सोळिया न पायन ईं चारी जिसा करम करतो थको इण न बरबाद कर नाखे मिनखजमारो तो एक पातर न ईं मिळ्यो है, पण वा मनख समाज रो जवानो साग मिलयाड कर न आपरा जीवण न बिगाड नांख उण स काईं फायदो हुवो ? मिनखजमारो तो एक लिछमीपति न ईं मिळ्यो ह, पण वो दूजा नै चूस न अत्याचार कर दूजा र साग नफरत अर द्वस कर न आपरी जिंदगी बिनाय दे तो उण मानखा-सरीर रो काईं मोल ? सही बात आ ह कै मिनखजमार पाय न मिनखपणो नी आयो अर पोता र माय न सूत्योडो मिनख पणो नी जगायो तो सगळी मणत बकार ह। लाखां करोड़ां लोगां नैं मिनखजमारो एक बार नी पण अलखा बार मिळ चुक्यो ह, पण फायदो काईं नी हुवो। वो मिळणो नी मिळण र समान ह। ओ इज कारण है क भारत रा मुनी महात्मा मानखा सरीर करता मिनखपणा न घणो मान दीनो है। उणां आपरी इमरत वाणी में आ इज बात कही ह—

नहि मानुषात् श्रेष्ठतर हि किंचित्

मिनखपणा सूं इधको चीज इण दुनिया में कोई नी ह।

धर्म रो प्राण है, सार है। जे कोई धम म मिनखपणो नी है तो वो धम दुनिया म कोई काम रो नी। ओ धम मानखा रै वासत आप है। जिको धम मिनखपणा न छोड नै मिनख पणा री परवा किया विना फलणो चावै, दुनियां र दिल मे वधणो चावै, तो उणरो आ कोसिस वाळू रेत में सू तेल काढण र समान है। मिनखपणा रै बिना धर्म थोथो है, मुड्दो है, कोरो देखावो है। पण आज सगळा धम मिनखपणा नै छोड न, आखां मदीठ करम मार्ग वधवा री होड कर। इण वासत ध सगळा धम अर धमधारी नाजोगा सावत व्है रह्या है। वां री हालत विना तेल रा दीवा जिसी व्है रही है। इसो दीवो जिको माटी री धण्योडो जिकण पर ओपतो रंग रोगन कियोडो, उण न फूटरा काच रा कपाट म राख्योडो, वाट समेत, पण तेल एक टीपो ई नी। तो इसो दीवो काई चानण रास ? ठीक इणीज भात आपां आपणा सरीर न आछी तर सिणगारला, उणन फूटरो, ओपतो बणायला, पाउडर अर क्रीम सू पोत न चमकीलो बणायला, गणा अर कपडां सू लादला, एक चमचमाट करती फूटरी कार में विठाय दा, घडी, चस्मो अर पेण लगाय लां, पण उण सरीर में मिनखपणा रूपी तल नी नांख्या तो इसा सरीर सू काई जिंदगी में रोसणी मिळ सक ? लाबो, चवडो, चमकीलो, मजवूत अर ओपतो सरीर तो अजगर रो ई व्है पण उण सू फायदो काई ? जे आप में मिनखपणो नी आयो तो ओ मानखा सरीर धरती पर भार रूप है, नकामा है, सर-सरद है।

आज चाफेर मिनख सूं मिनख न मिनायन है, मिनख इज मिनख री टीका पर, मांनखा री जड़ बुद्धि मांनखा वासत इज भय रूप व्है रही है। अर मानवता बापडी छेडा वाळ न बोर बोर जिमा थामूडा ढळकाय री है। मानखा री घणी समझणाई राजनीति, समाज अर धर्म सगळै भेळा होय न मिनखपणा न दुनिया सूं देसवटो दे दीनो है अर जठ देखो जठई दानवता नस्वरी ह।

इण कारण इज आज सगळा तत्वग्यानिमा, धमपुरधरा, विचारकां अर समाज र नेतावा री ऊंघ उडगी ह। व विचार में पडग्या हैं। मिनखपणा नाम री अमोलक चीज री मानखा में सूं अलोप व्है रह्यो ह, अवै मानखा री बेरार किया चालसी? मानखा री बाणो किया कायम रहसी? आज दानवता डक टक करती हस रही ह अर जिनावरपणो ताडव निरत में झूमर घाल रह्यो ह, वो सगळा ससार री विनास-लीला देखण न उडीक रह्यो ह। इसी अवखी वेळा म आपा न मिनखपणा सूं सेंद मेंद राखणी चाहिज उण नै ओळखणी चाहिज, उण-रो कीमत जाणणी चाहिज अर उण नै प'ल देवण में उतावळ करणी चाहिज नहीं तो मिनखपणा हीणो मानखो इज इण ससार न समाप्त बणाय नाखला। इसा भयकर विचार सूं इज रू रू में धूजणी छूट आव।

सवाल ऊठ सक के मिनखपणो इसी कांई चीज है? उण रो असली सरूप कांई ह? उण न आपा कीकर ओळख सका? कीकर अपणाय सका? सरोस्पर औ सवाल विचारण जोग है अर इणरो पडूत्तर आपां नै खोजणो इज पडसी।

आज मानखा जूण में मिनख री कीमत घटगी ह । मिनख न अठवेळा नास दीनो ह । अब तो पसा नै, भौतिक साधना न, जातपात न, थोथी मानवता न, रीत भात न, आधी राष्ट्रीयता न, प्रातीयता न, भासावाद नै अर आंधी पिड पूजा न घणो मान दियो जावै, उणरी घणी कीमत आकी जाव । इण कारण मिनखपणो त'स नै स व्हतो जाव ।

जठ धन माल, जात पांत, पथ सम्प्रदाय, अध परपरा, अध प्रांतीयता, अध राष्ट्रीयता अर आधा भासावाद सू ऊपर उठ न मिनख र बार म विचार कियो जाव, मिनख न मान दियो जाय, मिनख री कीमत आकी जाव, उठ इज साची मिनखपणो ह । ओ महापुरुसा रो कथण है । जठ विवेक धार न मिनख मिनख साग चोखो वे'वार राख, जठ पसा अर साधन करता मानखा री कीमत वधार आकी जाव, उठ इज साची मिनखाई ह, मिनखपणो है । मिनख चावै जिण देस, जात, पथ क सम्प्रदाय रो व्है, चाव जिसा कपडा परियोडो व्है, चाव जिकी भासा बोलतो व्है, चाव जिण गाव, सहर, प्रात क देस रो वासी व्है, चाव जिकाई धम पाळतो व्है अर उण रा जच जिसाई विचार व्है, छता पण उण न देख न मन राजी व्है उण नै देख नै हिया मे प्रेम ऊगन, उण रा सुख पेटै काळजी प्रगटै उण री जोजवाण पूरी करवा री भावना व्है, उण रा मादीवाड में मदद करवा रा इच्छा व्है, उण न नागो के भूखो देख न हिरदा में दया री भावना पैदा व्हैती व्है, उण रो दुख-दरद अर व्याधि देख'र आपणो हिरदो पिघळतो व्है,

उण रा आगूंछा पूरवा री इच्छा व्हे, उण रा सामाजिक अर मा'ली हालत दम न मदद करवा री लागणी व्हे, तो समझ लेणो क उठ मिनखपणो है, मानवता है। पण जठ इण सूं उल्टी हालत व्हे—मिनख न दख न नफरत, मार, धाप, ठगवाडो, छळ, कपट मारकूट करण री, मिनख सूं परज रासण री बिरती व्हे उठ समक लणो के मिनखपणो हारग्यो है अर मानवता परवारगी है। जठ मिनखपणो है उठ फरज, अधिकार अर बिवक है, बुद्धि रो तोल है, न्याव-न्याय है। पण जठ फगत परायो माल हड़पवा रा मीत व्हे, जठ मिनख माट पणा सूं इज भारा भरै अर आप रा फरज न नी ओळख, जठ अधिकार अर फरज रो ताळ मेळ नी वठ, विवक नी व्हे, सभ्यता अर मरजादा रो आमा म नी सोच्यो जाव उठ जिनावरपणो है, जगळीपणो है। इण सूं ई दो पावडा आगै जठ फगत अधिकारां रा इज माग व्हे आप रा फरज न आम्मा-मर्दीठ कर दियो जाव, फगत लाग लायणा अर लाग जावणा री इज नीत व्हे, दूजा सूं जबरदस्ती अर दबाव म दूजा करवा री इज नीत व्हे, काई न म्वा री मनोकामना इज नी व्हे, पातरीज—फगत पोत र पडरीज चिंता व्हे उठ दानपणो है। पण जठ पोता र फरज न ओळखियो जावै, अधिकार री चिंता नी व्हे दूजा रा ठोड दवा री मनाबन्तिया व्हे, सभ्यता अर मरजादा री पूरा पाळणा व्हे उठ देवपणो है। देवपणो सब सूं सिरमोड है, दूजी न्दर मिनखपणा रो ता अधमपणा में मानीं जाय।

मानव सू दानव बणणो मानवता री हार है। मानव सू महा मानव बणणो मानवता रो चमत्कार है पण मानव रो मानव होवणो मानवता री जीत है।

जे आप न मिनखपणो राखणो है तो द अर 'ले' री सम-तुला राखणी पड़सी, विवेक राखणो पड़सी। आप रा फरज अर अधिकार रो ध्यान राखणो पड़सी। आपा न आपणी अंतरघट सभाळणो पड़सी अर ओ मालम करणो पड़सी के कठई आपा मिनख नाम धराअता थका काम जिनावरां जिसा या रागसा जिसा तो नी कर रह्या हां ? आपां म मिनखपणो आयो क नी ? या पगत जीवण में दानवता इज नाच री' है ? कठई आपा मिनख रूप मे रवता थका दानवता रा काम तो नी कर रह्या हां ? आपां न सरीर तो मिनख री मिळियो है, पण मन मिनख री मिळियो के नी ? कठई आपा निबळा अर दुखिया पर चील भागला र ज्यूं झपट तो नी मारां हां, दूजा न डरावण न नाग र ज्यूं फूफाडा तो नी करां हां जळीक र ज्यू दूजा री लून तो नी चूसां हां, बिच्छू र ज्यू टंक मार न दूजा र तन मन न दुखी तो नी करता, मिन्नी र ज्यू राता डोळा काढ न घोघरा तो नी करता, सिंघ र ज्यू गरजना कर न दूजा रो सिकार तो नी करता छाळी नारघा र ज्यू परायो माल तो नी हड़पता कुत्ता र ज्यू आपस मे तो नी लड़ता ? घर म, गाव में नगर म प्रांत म, देस मे अर समाज म द्वस री आग तो नी सुळगावता ? लाच लेय न अत्याचार कर न, ठगवाटो कर न, दूजा रो खून चूस न अर दूजा पर डाड-पटेली जमाय न

रागसो निरनी रा काम तो नो करता ? घमड म श्राप न दूजां न घछेर घर नीच समम न श्रामुरी विरती रा करतब तो नो करता ?

इण तर रा सवाला री पडद बाफा लाबा वण मव है, पण आपणा अतरपट न समझण खातर श्रर मिनखपणा री जाच-पडताळ करण खातर श्र इतरा ई सवाल माकळा है। श्राज हरेक दस में दो-बरसी, तीन बरसी श्रर पाच बरसी निरमाण रा योजनावां बण रा है। इण काम में मोटा मोटा विद्वान गात र भिन लाग्योडा है। पण काई मानव निरमाण री योजना र बिना श्र भौतिक योजनावां सफळ हाय सकला ? काई मिनख म मिनखपणो लाया विना दानवता श्रर जगळी-पणो हटाया बिना मुनख गो विकास हाय सकला ? जे काई देस में मिनखपणो मरग्यो है, काई समाज म मानवता दबगी है, काई धम म सू मानवता न निकाळ दी है तो वो देस, वो समाज श्रर वो धम कदई ऊचो नी ऊठ सक। उण री मौत याळ रत पर माग्योडी है श्रर आंधी रा एक झपटा सू ई पड सक है। श्राप र सामुग दानवता श्रर पसुता ऊभी है। या र साग एक कानी मानवता ई ऊभी है। श्राप नै इण दोनां मे सू एक चीज टाळणी है। श्राप मानवता गळै लगाइ तो श्राप रो जीवण सफळ व्है जावला, श्राप रा समाज, देस, प्रात, धम श्रर जात रो इ नाम व्हैला, नी तो श्राप री मानवता मिटता पाण श्राप र समाज, धम श्रर देस र साग श्राप री इ बदनांमी व्हैला।

स्वामी रामतीरथ भारत रा एक मोटा सत व्है गया है, जिणा विदसा में जाय न भारतीय ससक्रती री प्रचार कीधौ। वांर जीवण री एक प्रसग है। एकर व जापानी जहाज म मुसाफिरी कर रह्या हा। उठै वान भाजन वासत फळा री जरूरत पडी। उणा इण वासत पूरी कोसिस कीवी पण फळ नी मिळण सू निरास होय नै बठग्या। जापानी लोगा र दिला में पोतारा दस वासतै घणो अभिमान भरयोडो व्है। व आप रा मुलक र खातर हर वखत मर मिटण न तयार रव। इण जहाज म जात्रा करतोण एक जापानी विद्यार्थी न पतो लाग्यौ क भारत रा एक मोटा सत फळ नी मिळण सू इण जहाज मे भूखा बठया है। उणे मन में विचार कियौ के ग्रो सत पोतार देस पाछो जासी जद म्हार देस अर इण जहाज री निंदा करसी। जापान अर जापानी समाज र वासत आ एक कळ क री बात होसी। इण वासत म्हनै कोसिस कर न फळ लावणा चाहिज। वो उठ्या, थोडा फळ ग्राप र खन सू लिया थोडा ग्राप र दोसतां सू लिया अर स्वामी रामतीरथ रै खन पूग्यो। फळ स्वामीजी रै चरणां में राख'र बोल्यौ—'लो महात्माजी ग्राप न फळा री जरूरत ही सो ग्राप इणा न बिना सकोच ले लिरावो।'

स्वामीजी घणा राजी हुवा, फळ लेय न व वांरी कीमत पूछता थका जेव में सू पसा काडण लाग्या। जापानी विद्यार्थी बोल्यो—'महात्माजी, फळा रा कोई कीमत नी है, पण जे ग्राप कीमत दवणाज चावो तो भारत पधारो जद ग्रा वात मत वहीजो कै जापानी जहाज खराब व्है उठ फळ नी मिळै।

आप म्हारा देस री बदनामी री पुडीको इण दरिया में इज नाख न जाइजो । साथ मत ले जाइजो ।'

आ बात सुण'र स्वामीजी अचभा म पडग्या । जापानियां री मिनखपणो देख न मन मे वांरी तारीफ करण लाग्या । इण भांत कोई भी देस री आदमी आप री मानवता न कायम राख न आप र देस री नाम बढाय सक अर मानवता न छोड न आप रा देस नै बदनाम ई कर सक ।

महात्मा गाधी विदसां म आप री मानवता कायम राख न भारत री नाम बढायो अर भारत रा विद्यार्थिया मानवता छाड न देस री नाम बदनाम कियो । बात यू बणी—एकर एक भारत रौ विद्यार्थी पढण नै लदन गयो । वो साइ स री विद्यार्थी हो । एक मोटा पुस्तकालय सू वो पोथ्या लाया करतो अर पढ्या करतो । एकर वो उण पुस्तकालय सू इसी पोथी पढण न लायो क जिण में मसीनरी रा भांत भांत रा नक्सा अर चितराम छ्योडा हा । विद्यार्थी री मानवता उडगी अर दानवता नाचण लागी । उण सोच्यो—'इतरा मोटा पुस्तकालय म सू अर इतरी ज्यादा पोथ्या म सू ज एक पोथी म सू चित राम अर नकसा फाड लिया जाव अर पाछो पाछी देदी जाव तो कुण देखण न बठ्यो है ?' लालच विद्यार्थी पर सवार व्हैग्यो । उण पोथा मे सू चितराम अर नकसा फाड'र पोथी पाछी जमा कराय दी । पुस्तकाल्य र अध्यक्ष उण भारत रा विद्यार्थी पर विसवास राख न बिना देख्यां ई पोथी जमा कर न अल मारी में राख दी । एक दो दिन पछ उठा री इज कोई विद्यार्थी

या इज पोथी लेवण न आयो। अलमारी स्यूं पोथी निवाळ न वो विद्यार्थी उण पोथी नैं उलट पुलट न देखण लाग्यो तो उण न व चितराम अर नक्शा निजर नी आया। उण पुस्त कालय रै अध्यक्ष सूं पूछ ताछ कीवी। अध्यक्ष बोल्यो—'इण पोथी नैं आयां न अबार थोड़ा दिन इज हुया है। दो दिन पैला इज एक भारत रो विद्यार्थी आ पोथी जमा कराय न गयो है। जरूर उण इण में सूं चितराम अर नक्शा फाड़्या हासी। पाछी आवण नवो ही अर दूजो कोई ल नी गयो हो।'

उण रो सक पक्को व्हैग्यो। भारतवासियां पर सूं उण रो विसवास उठग्यो। उण पुस्तकालय र बारणा पर बोड लिखाय दियो—

No entry for Indians'

भारतवासी माय न नी आय सकै। गलती कीवी एक भारत-वासी पण ठाको लागी सब भारतवासियां र अर बदनाम हुयो सगळो भारत देस।

भाई इसा खूटोड़ा काम सूं पूरो देस बदनाम नी हुवै? आज सगळो ससार सावधान हुयाड़ो है। थे आप रा थारला स्थल, साइन बोर्ड, मैं टूड मारका न गी देख। आप किसा धर्म नै मानण वाळा न्ही किसा देस रा वासी हो किसा कुटुम रा रापूत हो, किसी जात रा हीरा हो अे सगळी बातां कोई बखत नीं रास। वो तो आप न मिनखपणा री कसोटी माथ कस न इज भला भूंडा कहसी। आप र मिनखपणा री परीक्षा कर न इज आप री कीमत आवसी। उठ जात पात रो घमंड

सम्प्रदाय री टूंट पाखों अथवा मिनख रा गो साहन सार कांम नी आवसी। म्हां सूं अठ र गो मानणो साहन नी देखा। भल ई म्हार र घर में घरवा मरवा री घर है, म्हारी में पाप्या री म्हान दवाय-म्हाय न मरजादो है, चेहरा पर क्रीम पावडर पोतीजो है, पग पर मन दिरगा चमड़ीरा, मड़वाना, माला न कुन्दा कलडा कन्दोरा। म्हार रा हाजरी में हजारा नौकर चौकर रहता है, म्हार रा बड़ा कारखाना इलाक माल रहता है म्हाप री तिजारी में नाना भाण रा ढिग लाग्योड़ा है म्हार र निकल बाड़ा री बजार मान्डाड़ी है म्हार गजूवन पर हपता री ठाट लगाय बठी हो म्हार घटा लांद मधा री भड़ा लगाय देवो हो म्हार बाद मि पूजा पाठ नित-नम सर दान-धरम में पड़ब नी म्हाव सा हो, पन मिनखपणा री मोल इण बाता सूं नी व्है मिनखपणो इण बाटा सूं नी आन्दी आ सक। मिनखपणा नैं नापण तोलण हूजा दूजा सार कांम में आसी। मिनखपणो आपणी सूं, थांरी मेनतीरी सूं पढ़ायणी सूं अथवा राजनीति सूं नी परख्यो जा सक मिनखपणा री कसौटी मिनख री बवार दूज बन सक। म्हान लो एक आदमी महीना रा ३०) रु० कमाय, तो साल भर में उणरी पूरी कमाई ३६०) रु० हुई। ज सौ साठ बरसां ताई बराबर कमावतो रैव तो १०८००) रु० कमाय सक। आ उण र पूरी जिंदगी री पूंजी है पण एक हीरा री कीमत एक लाख रुपिया तक व्है सक। अब म्हान दूज बताओ क मिनख रा कीमत घणी हुई क एक हीरा रा? ज इण सवाल न ठाडा ठंडा दिमाग सूं सोच्यो जाय तो पतो लाग आदमी क मांनवा

रो कीमत हीरा सूं घणी है। आ बात मांन ली के हीरो लाख रुपिया रो है, ताम पण हीरा न परखण वाळो उण न बेचण वाळो अर लेवण वाळो मिनख इज है। आ बात ध्यान में रैवणी चाहिज के हीरा करता हीरा री पारखी मोटी व्है।

जे मिनख म मिनखपणो थाय जाव तो हीरा रा उजास न ई भाखो पर नाख। मिनखपणा रा उजास सूं इज मिनख री कीमत वधै। इण रै बिना मानखा सरीर री कीमत व्हैती तो मुड़दा न लोग वेच नाखता या घर म राख लेवता।

पण आज रा जुग म मिनख करता पईसा री कीमत घणी है। जे एक कानी कोई मिनख मादो पड्यो पीड़ा सूं कुरळाय रह्यो व्है अर दूजी कानी उण र रान इज एक सिक्को पड्यो व्है, तो मानखा रो हाथ उण मादा मिनख कानी नी वध नै पैलो सिक्का कानी इज वधता। उण मिनख न नो पण सिक्का नै छाती मे चेपण री मन होवता।

एक दिन मन म जावता देख्यो क एक आदमी सड़क र किनार तावड़ पड्यो है। कपड़ा फाटोड़ा हाडका निरळ्योड़ा अर ससार म मड़ो पलक री पावणो है। सड़क पर भीड़ भरपूर ह। निरा ई मिनख आय जाय रह्या हा। व सगळा उण कानी देखता अर आग रवाना होवता। उणी वखत एक चमचमाट करती मोटर पवन र पाण आई अर पाणी र रेला र ज्यू चालती चालती एकदम रुकगी। उण म सूं दो मिनख उतर्या अर नाचा देखता-देखता पाछ कानी गया। छेवट वान वो रुपियो मिळग्यो जिको उणा मोटर में वठ्या पड्यो

देख्यो हो। स्यात वै इण कारण इन मोटर सूं उतरग्या व्हैला पण उण मारग आदमी नै देख नै ई नीं देख्यो। वांरी निजर में मिनख करतां सिक्कां री कीमत घणी ही।

अब अठै इज मानवता हारगी अर जिनावरपणो जीतग्यो। जठै अवस्था पड़ै में ई मानवता हार नै दानवता रै चरणां में नीं आवै, उठै इज साची मानवता समझणी चाहिजै।

पंजाब रै बंटवारै पर आयोड़ा एक सै'र री बात है—उठै एक हिंदू डाक्टर घणा बरसां सूं रैवता करतो। उण री प्राइवेट प्रैक्टिस चोखी चालती। वै हिंदू मुस्लिम दंगां रा दिन हा। हिंदू अर मुसळमान मिनखपणा सूं हाथ धोयनै मजहब, जात अर देस रै नाम पर खून री होळी खेल रह्या हा। उण वखत गुंडां नै आप री दानवता दिखावण रो मोको मिळग्यो। वणा इण मोका पर लूट-खसोट कर नै लाभ उठावण री सोची। मिनख नै बरबाद करण री बात नै कर दी। वै सीधा डाक्टर रै घर आया अर उण पर हमलो कर दियो। डाक्टर रा घर जळाय नाख्यो, धन माल लूट लियो, लुगाई अर टाबरां नै कतल कर नाख्या। इण रै पछै वै दवाखाना में पूग्या जठै डाक्टर बैठ्यो हो। वणा आवतां इज धड़ाधड़ गोळ मारिया पर भाटा फेंकणा मांड्या। इण सूं कांच रा टुकड़ा उछळ्या अर सीधा गुंडां रै सरीर में जाय घुस्या। गुंडा घायल होय नै भाजा पड़ग्या। डाक्टर इण मौकै पर ई मिनखपणो नीं छोड्यो। वो चुपचाप बैठ्यो सगळो तमासो देख रह्यो हो। गुंडां नै घायल देख'र उणरै मन में बदळो लेवण

री कोई भावना नी ऊठी। उल्टी उणरी रग रग मे मिनखपणी जागण लाग्यो। वो ऊठ्यो अर घायला नैं प्रम सू कवण लाग्यौ—'भाइया ! थे घवराइजो मत। जो हुयो सो हुयो। म्हू अबार काच रा इण टुकडा नै काढ़'र मल्हम पट्टी कर दला।' वो मानखा प्रेमी डाक्टर वार सरीर मे सू काच री एक एक टुकडो बार निकाळ्यो अर घाव धोया न मल्हम पट्टी कर दी। आ मल्हम पट्टी वारा घायल दिला पर ई मल्हम-पट्टी कर री' ही।

काई आप ई उण डाक्टर र ज्यू मानखा रा बुभयोडा अर दुखी दिल पर मल्हम पट्टी करण री काम करो हो ? कड कडाती ठड म धूजता मिनख नैं देख न आपरो आ इच्छा हुइ है के आपर तन जो फालतू कपडा है, उणन देय दा। कोई गरीब विधवा अन न दुखी देख नै आप उणरो जथाजोग मदद करी है ? कोई अनाथ निराधार न दुखी मिनख री भलो करवा खातर आप कदई कोसिस करी है ? जे इण सवाला री जवाब हु कारा म हाव तो समझणो क आपरे सून म हाल सस्कार मोजूद है। जिण मिनख री नसा मे मिनख-पणा री धटकण सुणीजती व्है वो इज साचो मिनख है।

एक गरीब कुटुम हो अर उणरी पेट भराई करवा वाळो एक इज मिनख हो। वो आखो दिन म'णत मजूरी कर न कुटुम री पाळणा करतो। एक दिन उणन कावण न कम मिळ्यो। दूजोड दिन तन तोड मणत करण पर ई भूखो रैवणो पड्यो। तीज दिन पण यो इज हाल रह्यो। छेवट भूख सू वो मादो पडग्यो।

उणरी मा वापड़ी बडी चिंता म पड़ी । सुख पूछण न पाड़ोसी आया । किणई कह्यो—इण न डाक्टर कनै लेजावो, किणई कह्यो—इण न विदामा गै सीरो खवावो, किणई कह्यो—इणन दूध रा खीर पावो, पण किणई आ बात नी कही के ऊभा रहो, अ सगळी चीजा म्हू लय नै आऊ । मद री मानवता नींद म सूती ही, पण मा री ममता मा इज जाण उणरा गळा मे एक छोटासोक सोना रो मादळियो हो । वा मादळियो लय न डाक्टर कन पूगी अर बोली—'डाक्टर सा'व म्हार एकाएक बेटो है उण बिना म्हारो गरीब कुटुम भूखा मर जावला म्हे निराधार है जावाला, किरपा कर आप म्हारो ओ मादळियो लिरावो अर उणन बचावो ।' डाक्टर बाल्यो—'मा चाल, म्ह थार साथ चालू ।' डाक्टर उणर साग झूपड़ा मे पूगो जट डोकरी री बेटो सूतो हो । डाक्टर उणरी पूरी तपास कोवी तो उणन मालूम हुयो के मिवाय गरीबी र उणरै दूजो कोई राग नी हो । गरीबी इज उणरी सब सू मोटो रोग हो । डाक्टर जेब म हाथ घाल्यो अर १७००) रु० रा नोट निकाळ'र रोगी र हाथ म दवतो बोल्यो—ल भाई आ थार रोग री असली दवा है । नोट मिळण सू रोगी ठीक व्हैग्यो । इणर बाद वो वपार करण लाग्यो । थोड़ा दिना म इज उणरो वपार ठीक चालण लाग्यो अर उण लाखा रुपिया कमाय लिया । वो पचास हजार रुपिया लेय न डाक्टर कन पूग्यो अर बोल्यो—'आप म्हार राम रो सही इलाज कियो हो । आप मानव नी पण महामानव हो । म्हारी आ मामूली भेट स्वीकार करावो । डाक्टर म मिनखपणो इज नो पण देवपणो

मौजूद हो। वो पचास हजार रुपिया पाछा दवतो बोल्यो— भाई, इणा न ले जाओ, म्हार नी चाहिज। म्हन म्हारै मिनखपणा रो वपार नी करणो है। छेवट उण डाक्टर सा'ब न वारी फीस रा १७००) रु० बडी बीणती कर न पाछा सूप्या।

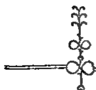
साची बात आ है के इसा मिनखपणा रा धणी आपा र दस में तो काई दुनियां रा आगणा म ई कितराक है। नाम पण वठ-रुठई इसा मिनखा रा दरसण व्है सक।

हिंदी रा मानीता महाकवि निराला जिणा रो पूरो नाम सूयकात त्रिपाठी निराला' हो, व दुखियां न दख न आपरो पड होमवा न तयार व्है जावता। एकर निरालाजी न महादवी वर्मा ठड में धूजता देख्या। महादेवी री हिवडो भरीज ग्यो, व समझग्या के इणा पोता रो ऊनी कोट काई गरीब नै दे दीनो है, इण वासत महादेवीजी एक नवो ऊनी कोट सिवाय नै लाया अर निरालाजी न दवता बोल्या— देखो, ओ कोट आपरो नी म्हारो ह। म्हैं फगत आपरे पड री रखा खातर करवायो ह। इण वासत म्हारा हुकम बिना आप ओ कोट कोई न नी दे सको।'

थोडा दिना पछ निरालाजी महादेवी र निजर सू आधा-आधा रवण लाग्या, पण महादवी रा दयाळु निजर सू काई छिप्योडो हो। उणा निरालाजी न मिळता इज पूछ्यो—'आज आप कोट नी परयो।' प'ली तो उणा गाळ मोळ पडुत्तर देवण री कोसिस कीवी, पण अनुभवी आख्या सगळी बात

खोल न कही—एक दिन एक मगनो साफ उघाड़ो बठघो ठंड में धूज रह्यो हो। म्हें देख्यो म्हारा सूं ज्यादा कोट री जरूरत इणन है, सो म्हें तो उणन कोट सूंप दियो।'

आ मिनखपणा री साची तस्वीर है। जद मानखा र हिरदा म मिनखपणो कायमी वसवाट कर रखला उणनें एक पलक वास्त ई नी भूलला, उणर मन में मिनखपणा री गूंज गूंजती रवला, उण टेम हज इण दुनियां में सुख अर सान्ती री वधारो व्हैला उण वखत हज गरीबाई रा बादळ बिखर जावला अर सुख री सूरज चमकला। इण मौका पर इण मिनख नैं आठ सिध अर नवनिध मिळला विसो धारण भावना अर राष्ट्रां, जातियां नै सम्प्रदायां र निरमाण री सपनो साकार व्हैला।



आचार अर विचार

आपां री आध्यात्मिक प्रेम चावो है। संसार रो कोई पण देस आध्यात्मिक विकास में आज ताईं आर्यावर्त री बराबरी नी कर सक्यो। आर्यावर्त रा ग्यानियां आत्म तत्व रा ऊंडा मर्म न जाणवा खातर अथाग कोसिस कीवी अर उणमें वा न पूरी पूरी सफळता पण मिळी। भारत रा तत्व चिंतकां र विचार रो खास केंद्र बिंदु आत्म विकास है। वे न्यारा-न्यारा मारगां रो आसरो पकड़ न उणरा हर पासा पर विचार कर नै छेवट आत्म विकास री धुरी पर इज पहोंच्या। वा न जिण विचार में आत्म विकास री दीसती उण न वे छोड देता। आत्म विकास रो अरथ है—ग्यान, दरसण अर चरित्र रो विकास करणो, आचार अर विचार रो विकास करणो, सरूप रो विकास करणो, आत्म गुणां न वधावणा, ध्यान अर किरिया रो विकास करणो। जठा ताईं इणां रो विकास ठीक हालत में व्हैला, उठा ताईं आध्यात्मिक क्रांति नी व्हैला।

भारत रा दरसण शास्त्रां में वेदांत दरसण शास्त्र प्रधान ग्यान न इज मान देवै अर वेदिक करम न । वेदिक शास्त्र कवै—'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति' यानी ग्यान बिना मुगती—आध्यात्मिक प्रगती ना व्है । सो वेदांत दरसण मानै क करम सूं [illegible] मोख मिळै । वां रो कवणो है—ग्यान अर क्रिया बिना क्रिया बिना रो ग्यान भार-रूप है ।

न्याय दरसण रो कवणो है क कारण रो नास हुवा [illegible] इज काम रो पण नास व्है । जनम रो कारण है मिथ्या ग्यान । मिथ्या ग्यान नस्ट होवण सूं दुख, जनम प्रवृत्त आद नस्ट व्है जाय । तत्व ग्यान सूं दुख रो नास व्है अर मोख मिळै ।

सांख्य दरसण कवै—जठा ताई प्रकृती अर पुरुस रो विवेक ग्यान नी व्है जठा ताई मुगती नी मिळ सकै । इण प्रकृती अर पुरुस रै बीचला भेद रो ग्यान उपजै, जद पुरुस आपा रो ग्यान न निरगुण निरलेप अर न्यारो मान [illegible] न्यारो मिळ जावै । विवेक ग्यान अर मोख रो [illegible] व्हे है ।

वैसेसिक दरसण शास्त्र कवै—इच्छा अर द्वेस [illegible] धरम अर सुख-दुख रो कारण है । [illegible] इण सूं पाछा [illegible] इण कारण इज [illegible] । ये आघी कमां रो विरोध कर अर [illegible] आग में नस्ट कर न मोख न पूगै । [illegible] — मोख रो मारग है ।

पारसा री जरूरत व्है । जे पतंग री एक पाग टूटी भागी व्है तो वो प्राभ मे नी उड सक नाव वो कितरी ई कोसिस कर पण सफळता नी मिळ सकै । उणा नै सफळता उण वखत इज मिळ ला जद उणरा दानू पास मजबूत अर सागो पाग व्हैला । ठीक इणीज भांत एक मानव न आपरी जिंदगी मे सफळता उण वखत इज मिळैला जद उणरी आचार अर विचार रूपी दानू पांख मजबूत व्हैला ।

बिजळी रा दो तार व्है—एक नेगेटिव अर दूजो पोजटिव । जठा ताईं दोनू तार न्यारा रव उठा ताईं आपरा कमरा में जगमगाट नी व्है सक, पखो आप न हवा नी घाल सक, रेडियो आप न मीठो राग नी सुणा सक, हीटर आपरो पांणी गरम नी कर सक । आप जद जितरोई बटण दबावो मण कोई गरज नी सज सक । पण दोनू तार मिळतां पाण बटण दबावतां इज उजास पसावरणो कर दला, पखो नाचण लाग जावला, रेडियो मीठो सुर सभळावला अर हीटर पांणी गरम कर दला । ठीक इसी इज जीवण एक मानव री पण व्है । ज उणरा जीवण में आचार अर विचार रूपी दो तार नी व्है तो आध्यात्मिक उजास नी फल, प्रगती री हवा नी मलै संसार रै आध्यात्मिक संगीत री सरावळी नी साभळीज अर साधना में गरमी नी आव ।

वग्यानिका री आ मानता है के आक्सीजन अर हाइड्रोजन र संजोग स जळ तत्व तयार व्है । इण दोना रो संजोग नी होव तो पाणी तयार नी व्है सक । पाणी विना जीव री

किसी'क हालत व्है इण बाबत आप कल्पना कर सको हो। इणीज भांत आचार अर विचार अेक दूजा रा सहयोग सूं जीवण रूपी जड़ तयार व्है सकै। इण दोनां रो संजोग नीं व्है तो जीवण में साधना रा प्राण नीं आय सकै अर जीवण री अेक तरै सूं आध्यात्मिक मौत व्है जावै। डाक्टरां रो कैवणो है कै आपरै सरीर में दो तरै री ताकतां है—'मस्क्युलर स्ट्रैंथ' अर 'नर्वस स्ट्रैंथ'। आपणी भासा में आं नै सरीर री ताकत अर नाड़ी री ताकत कय सकां। अे दोनूं ताकतां सरीर में अेक सरीखी है जद आपणो सरीर निरोग अर मस्त रैवै। सरीर नै मजबूत अर आनंद पूरण राखवा वास्तै आ ताकतां जरूरी है। इणीज भांत आत्मा री निरोगता अर मस्ती खातर ग्यान अर कर्म यानी आचार अर विचार जरूरी है। इण दोनां ताकतां रो अेक सरीखो विकास व्है जद इज आपणी आत्मा निरोग अर मस्त रैय सकै। इणां में सूं अेक री बेपरवाही करता थकां जो आपां जीवण रो निरमाण करणो चावां उजळो मिनखपणो राखणो चावां तो आ बात आकासा फूल जिसी असम्भव है।

जीवण रा मरम नै उघाड़तां थकां महाकवि जयशंकर प्रसाद कामायनी रा रहस्य सरग में ठीक इज कही है—

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है इच्छा क्यों हो पूरी मन की।
एक दूसरे से मिल न सके, यह विडम्बना है जीवन की॥

आप देख्या व्हैला कै घड़ियाळ रै दो कांटा व्है। अेक कांटो साठ मिनट में आगो सरकै अर दूजो कांटो साठ सैकंड में

भाग सरव अर साठ मिनट म पूरो चक्कर लगावल। अे दोयू काटा ठीक ढग सू चाल जरे इज घडी ठीक समय बताय सव। दोनां मे स एक कांटो मी व्है या ठीक ढग सू नी चालतो व्है तो घडियाळ ठीक टेम नी बताय सव। उण हालत मे घडियाळ सांदी गिणीजला अर घडीसाज न उणरो इलाज करणो पडला। ठीक इणीज भात आपण जिंदगी मे आचार अर विचार रा दोनू काटा ठीक ढग सू चाल या दानूं काटां म सू एक खराब व्है जाव तो आपणो जीवण रूपी घडी आगे नी बढ सक। उण हालत में आत्म सुद्धी या तपस्या सू जिंदगी रूपी घडियाळ रो इलाज करणो पडला।

आज म्हू देस के आपणा सामाजिक जीवन में खूब गड-बडी चाल री' है। एक कानी पढाई री भार बढ रह्यो है। विद्यार्थी पोथ्या रैं बोझ सू दबग्या है। वा रा विचार इतरा आग वधग्या है के समाज वा रा विचारा न पकड नी सक। दूजा कानी आर आचार अर विचार रो अो हाल है के व मौज सौक, भोगवाद अर फसन अर खावण पीवण न इज जिंदगी रो असली सुख समझ। धन री वर्गो वजावण म इज धा न जीवण रो आणद आव। इणीज भात जिको पुराणा विचारा रा जूना मिनख है व आपरा अंध सिरधा-पूरण पुराणा विचारा न इज पकड न बैठ्या है, पण आचार रा क्षेत्र में व इ घणा लार है। व 'पडी कमणो करती वसत वेवार मे वियोडो भूलां अर पापा रो उच्चारण कर न 'मिच्छा मि दुक्कडम' तो देदला पण जिंदगी में आ चीज नी उतरला। धम स्थान सू बार निकळ्या पछ जीवण रा मदान में वारो

वी इज रवयी रवला जिकी के पला ही।

ओ इज कारण है के जवाना री आचार सूं सिरका धीर धीर कम व्है री' है। भारत वासियां र जीवण में आचार अर विचार रा अठगाव में एक दरार सी आयग्यो है। केई'क लोग बिना विचार आचार न पकड्या बैठ्या है तो केई'क लोग बिना आचार विचारां रा पूछ पकड राखी है। समाज में दोनां री ताळ-मेळ निजर नी आय रह्यो है। ओ इज कारण है के आज आपणो आध्यात्मिक जीवण रेगिस्तान जिसो हुय रह्यो है, मरु भूमि रा मिरग तिसणा र ज्यूं आध्यात्म री आडम्बर जरूर दरसण न मिळसी पण उणरै मन जायण सूं आध्यात्मिकता नाम री कांई चीज उठ नी मिळसी।

एकर अद्वैतवाद रा एक मोटा विद्वान भारत म घूम रह्या हा। उणा अद्वैतवाद भणियो तो घणोई ही पण गुणियो नी हो। एक दिन फिरता फिरता एक भगत रै अठे जाय पूगा। उण दिन जोर री सरदी पड री ही। भगत पूछियो—'सनान करण न पाणी लाऊं, महाराज ?'

वदातीजी हंस्या अर बोल्या—'था में कांई समझ ना है, जठ ध्यान मगन खळ खळाट करती वय रही है, उठ सिनान री कांई जरूरत है ?'

भगत पण काची नी हो। उण वदातीजा री आछी तरै सूं परीक्षा लेवण री विचारी। उण घर जाय न आपरी लुगाई न बड़ा पकौड़ा बणावण री कह्यो। वदातीजी न भगत आपरै घरां लेग्यो। खूब आगता सागता करी अर भोजन करायो।

भोजन करयां पछै भगत वान आराम करण वासतै एक कमरा मे लेग्यो। वेदांतीजी पोढग्या। भगत मौको देख'र दरवाजो बंद कर दियो अर बार कूंटी लगाय दियी। वेदांतीजी गरमा-गरम पकोड़ा खाया हा इण कारण वांन जोर री प्यास लागी। अठी-उठी देख्यो तो भगत उठै पाणी नी धरयो हो, सो झेनट वेदांतीजी ऊठ'र दरवाजो भचीड्यो पण भगत री थाई पडुतर नी मिळयो। व जोर सूं बोल्या—'अरे भाई, म्हनै तिरस जोर री लागी है।

भगत बोल्यो—'महाराज ! ध्यान मगा बथ री है, उणमें सूं एक लोटो भर न प्यास बुझा लिरावो।' वेदांतीजी समझग्या अर मन म सोच्यो क तर न सवा सेर मिळयो तो मरी। तण हार'र भगत सूं माफी मागी। भगत दरवाजो खोल्यो अर पाणी लाय न प्यास बुझाई।

इणीज भांत रा थोथा ग्यानवादी आज दुनिया में अर खास कर भारत में घणा व्हैग्या है। वासूं समाज में विचारा री तरक्की रुकगी है। जडता अर गैर जिम्मेवारी वधगी है। आचरण री तो काळ इज पडग्यो है। आज आपां नै आपणी इसी फोरी हालत पर विचार करणो पडला के दरअसल मे आपा अर आपणो देस लार क्यूं रग्यो है। दूजा देस आध्यात्मिकता री डाग नी कूटै, लोग पण ईमानदारी अर नैतिकता में आपण मुकाबै सूं आगै बध्योडा है। इणरो कारण औ है क वार विचार अर आचार में ताळमेळ है। वांरी कथणी अर करणी एक है। इण कारण इज वांरो जीवण ऊंचो ऊठ्यो। अठै वट्या विद्यार्थिया सूं म्हूं एक सवाल पूछणो

चावू के 'राम जाता है' इण वाक्य में कर्ता कुण है अर क्रिया किसी है ? साफ है के 'राम' कर्ता है अर 'जाता है' क्रिया है। जे फगत कर्ता इज व्हे अर क्रिया नी व्हे तो काई वाक्य बण सक है ? वाक्य न पूरो बणावण वासत कर्ता अर क्रिया दोनू जरूरी व्है। ज कर्ता व्है अर क्रिया नी व्है तो वाक्य पूरो नी बण सक अर न उण सब्दां री कोई अथ ई निकळ सक। जिदगी एक वाक्य है अर वो जद इज पूरो व्हे सक जद आपा ग्यान न कथणी सू करणी में उतारां।

बडोदा री एक बात म्हन याद आव। सर सयाजीराव र सभापतित्व म एक विराट सभा होय री' ही। उणमें अहिंसा पर भासण राख्यो गयो हो। एक मद्रास वासिन्दा विद्वान रो भासण इतरो बढ़िया अर इतरो मनमोवणो हुयो के लोग एक ध्यान सू मनरघाडा व्हे ज्यू सुण रह्या हा। पडाळ ताळिया री गडगडाट सू गूज रह्यो हो। भासण देवता देवता विद्वान रो सरीर पसीना सू भवाण व्हेग्यो। उणा जेब में सू रूमाल काढण न हाथ घाल्यो पण व बालका में इतरा मगन व्हेग्या हा के रूमाल काढ़नी वखत बारी जव में सू अणजाणपण को इडा पण बार पडग्या। बान दखता ई सगळा लाग अचमा म पडग्या अर कवण लाग्या—'अहिंसा पर इतरो गभीर बाता कवण वाळो आदमी ई इडा खाव ?'

अध्यक्ष पद सू भासण करता थका सर सयाजीराव बोल्या—'इसा लोगा सू इज मुलक रो सत्यानास हुवो है जिणां री कथणी अर करणी में वडो भेद है। विचार र साग जिणा र जीवण म आचार नी व्हे व वारा भासण भट्ट व्हे।

ग्यान र साग आचरण करणो ई घणो जरूरी है। भारतीय संसक्रिती रा विचारक सू एक साधक सवाल कियो— 'भगवान ! ग्यान रो फळ काई है ?' विचारक पडुत्तर दियो– 'ज्ञानस्य फलं विरति' ग्यान रो फळ बुरा कामां सू आघो रैवणो है। धमदास गणि उपदेस माळा' में कह्यो है— एक गधो है जिणरी पीठ पर असली चदण लाद दियो जावै, जिण में खूब सुगधी है, पूटरापो है, ठण्ड है पण गधा रै वासते तौ इण सगळी चीजा री कोई कीमत नी है। उणर वासते तो औ भार रूप है। इणीज भात जिको साधक ग्यानी तो है पण आचरण बिना रो है उणर वासते वौ ग्यान भार रूप है, थोथो है, काई काम रो नी है—

जहा खरो चदण भारवाही भारस्स भागी न हु चदणस्स ।
एव खु-नाणी चरणेण हीणो नाणस्स भागी न हु सुगइए ॥
—उपदेशमाळा

महात्मा बुद्ध एक बात रूपक में कही है—ज्यू गाया चरावण वाळो ग्वाळो दूजा री गाया न चार, वौ गाया न गिण सकै पण मालिक नी बण सक, दूध नी पी सक। इणीज भात जो थोथो ग्यान बाफ वौ इण आचरण रो, अनुभव रो स्वामी नी है। वो फगत पोथ्या गिण सक या दिमाग म ग्यान न ठूस सक। जिण तर स चमचो भात भात रा भोजना म फरतो जाव पण वौ रस री अनुभव नी कर सवै, इणीज भात कोरो ग्यान बाफण वाळो अनुभव रस रो, आचरण र आणद रो स्वाद नी ले सक।

इण वासते जिण तर सूरज अर उजास दोनू साथ-साथ

रत, उणी तर ध्यान अर क्रिया, आचार अर विचार दोनूं माग रवला, जद इज आपणा जिंदगी साधना र तप सूं चमकण लागला।

घणखरा लोग आता मोटो मोटा वणावेला, विचारा में आपन जीतण नी दवला पण जठ आचार पर अमल करण री सवाल आवला, उठ कोइ न कोई बहानो वणाय न टरक जावना। श्री मानवा री मोटो दुरभाग है के वो विचारा न आचार री रूप देवती घवरोज। केई लोग विचारा न सामळती वगत घणी सहणसीळता वताय कोर सायक वार मामन कोई निचार राख, उण वगत नी उणरा हा में हा मिळाव, उणरी तारीफ रा पुळ वाध पण जिण वगत उण विचारा पर अमल व्हैणी सरू हाव व इज लाग उणरा विरोधी वण जाव। विचारा सूं सहमत अर काम सूं असहमत विचारा सूं राजी अर काम सूं वे राजी हावण वाळा श्रीमानां री गन्या समाज मे कम ना है अर जठा तक समाज म विचार अर आचार री दुभात है उठा तर इणरी गाडी कादा म इज फरचोडी समभणी चाहिन। इण कारण इव विचारां न आचार री रूप दवता समाज जिका मानसिक निवळाई बनाव। हाराम न उल्टो कर देव या ईगा सूं उठ इज अनवया रवणी चाव, औ भयकर रोग है। हिसाव सूं आचार साध्य है अर विचार साधन है। जठा तक आपा कोई विचार न आचार रूप म काम में नी उताराला, उठा तक उण विचार री काई कीमत है? इण वामत जे विचार र माफक थाडो घणो ई आचार व्है तौ समाज न तरक्की करता टम नी लाग।

महाभारत काळ में दुरजोधन मोटो राजनीतिग्य हो। उणरी राज सभा में मोटा मोटा विद्वान, सास्त्री, इतिहास रा जाणकार, श्रथ सास्त्री श्रर राजनीतिग्य हा। सगळा लोग सास्त्रां रो मथण कर नै उणर श्राग निचोड राखता पण दुरजोधन फगत एक इज बात कह्या करतो—

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्ति।
जानाम्य धर्मं न च मे निवृत्ति॥

म्हू धर्म नै जाणू हू, पण उण पर चाल नी सकू। म्हू श्रधम नै पण जाणू हू, पण उणसूं श्रळगो नी रय सकू।

फगत पोथियां में किताबी ग्यान ठूंस्या सू इज जे कोई मिनख ग्यानी बण जावतो व्है तो पुस्तकालय रा श्रलमारियां पण ग्यानी बण जाय। एक रोमन तत्ववेत्ता रै श्रागे एक लबाड (वाचाळ) डींगा मारतो बोल्यो— म्हू कई मोटा मोटा विद्वान देख्या है श्रर वांरै साग बातचीत पण कीवी है।' तत्वचिंतक पडुत्तर दियो— भाई, म्हैं पण श्रनेक धनपतियां न देख्या, वांरै साग बातचीत भी कीवी पण इणसू म्हू धनवान नी व्है सक्यो।' स्वामी रामदास कह्यो है—

समझलें श्राणि बतलें ते चि भाग्य पुरुष झाले।
वर ते बोलत फिरा हिले करटे जन॥

भावार्थ श्रो है के—जिको भाग फूटो है वो फगत बातां इज कर, पण भागधारी वो है जिको विचार नै समझ श्रर उण पर श्रमल करै। एक सायर कह्यो है—

खुदा का नाम तो श्रक्सर जबानों पर है श्रा जाता।
मगर काम उससे जब चलता कि वो दिल में समा जाता॥

साजम रो चमतकार

भारत एक असी (खेती) प्रधान इज नी, रिसी प्रधान
देस पण है। अठै केई आसम न्यारी रिसी महात्मा व्हैग्या सत
महत व्हैग्या। जिको पोत सजम री साधना तप री आराधना
अर मन री मथण कर न आग बढग्या अर आपरा पवित्र चरित्र
निरमळ वाणी सू दूजा न ई प्रगती रा मारग पर आग
देवता गया अ पोत जागता जाता हा। जात
वासत कोई दूजा उजास री जरूरत नी रव। ज
...स नी व्हे तो वो दूजा न काई परकास देव
रा महात्मावा री वाणी आपा न इण वासत ग्यान
...स सबी व बार खुद र जीवण म सजम रूपो
री हा।

...जम री अथ है—आत्मा न काबू
सरीर न अकुस म राखणो, इद्रिया ...
दूजा पर काबू राखणो ... है, ...
काबू राखणो घणो दोरो ... वि...

है—'मन सूं बळवान आदमी वो इज है जिको पोता र पंड पर काबू राख सक।' जो खुद न इज खुद रा वश मं नीं राख सकं, वो आदमी कदई सुखी नी व्है सकं। सुख रा मूळ भतर है—पोता न काबू म राखणो। भगवान महावीर आ वात मद निजर राख न इज आपरा देसना-वखाण में कही है—

अप्पा चेव दमेयव्वो अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होई अस्सिं लोए परत्थय॥

उत्तराध्ययन, अ० १, गा० १५

खुद री आतमा नै, खुद रा मन न, इंद्रियां न अर वाणी न पूरा काबू म राखणा चाहिजे। बराबर पोता पर अंकुस राखणो घणो अबखो है। जिको मिनख खुद पर अंकुस राख लेव वो इण लोक अर परलोक दोनां में सुखी रव।

आज ससार रा रगमच पर अ जितरा ई राष्ट्रवादी धम वादी, समाजवादी या पूंजीवादी नेता अर मोटा आदमी निजर आय रह्या है, वांरो काम दूजा न दबावणो, दूजा पर राज करणो अर आपरी सिक्को जमावण री कोसिस करणो है। आ बीमारी भारत म बडी जोर री फल्योडी है। अठ दूजा नै दबावण वासत भात भात रा हथकडा तयार किया जाव, घोसणा-पत्र निकाळ्या जाव, फौज पटा ऊभा किया जाव अर सस्त्र पाटी सभाळ्या जाव। पण इसो कोई माई रो लाल तयार नी व्है के जिको पोता रा पंड पर अंकुस राख सक। समाज म, धर्म म, वेपारी जगत म अर राष्ट्र मे भांत भांत रा कानून-कायदा घड न जनता पर लादया जावै। इण कानून कायदा न प्रजा रा सुख दुख सूं कोई मतळब नी है।

दरअसल में अे सगळा कांनून कायदा नेतावां रा स्वारथ, थोथी इज्जत अर वांरी कुरसियां री सही सलामती वास्ते बणाया जाव । जिका कांनून कायदा जनता री भलाई वासते बण वां न तो जनता आपसूं आप बिना कह्यां, खुद री मरजी सूं मान लिया कर, पण जिका कांनून नेता लोग बणाया करै वा री पाळण वां न खुद न पसं करणो चाहिजै, जद इज व कानून सुखदायक बण सक । पण आज तो उलटी गंगा बय री' है । जठी नै देखो उठी न ई दूजा पर दबाण अर हुकूमत करण री चक्कर जोर सूं चाल रह्यो है ।

दबाण अर संजम न एक समझण वाळा लोग आ बात भूल जावे के संजम तो पोता र मन सूं पाळयो जावै अर दबाण जबरदस्ती पाळण करायो जाव । जे दबाण री नाम इज संजम है तो जेळ में भूखा कदियां सूं लियो जावण वाळो काम ई संजम गिणीजला । एक गरीब आदमी रो भूखां मरणो फाटा तूटा कपड़ा पैरणा आत भात री तकलीफां झेलणी संजम है तो पछ फौज में सैनिकां न दियो जावण वाळो आडर अर नौकरां पर मालिक री अंकुस संजम क्यूं नी गिण्यो जाव ।

सरासर आज संजम सब्द री मान-तांन इतरो घटायो है कै उणरै वासतै अबै घड़ वाळ अर कारण अकारण मामूली बात है । उणरो उच्चारण सुणता पाण, उणरा सनमान रा बोझा सूं भारतवासियां री मन अर मस्तक दोनूं झुक जाव । इण वासत आज संजम सब्द पर बहोत गै'राई स ऊंडो विचार करण री जरूरत है । घणखरा लोग घणा दिनां सूं कोई एक बात न कहता आय रह्या है पगत इण वासत इण बात न साची

भी मानी जा रह्‌ । आज भारत वासियां र जीवण में संजम री घणो ह्रास व्हियो है । जे भारत में संजम व्हैतो तो भारत वासियां री जीवण सुखी, निरोग, संतोषी होवतो अर संसार में मोजां माणतो । पण आज भारत रा लोग विलासिता री भावना रा विलासता में पड़ र विलासिता री गदी गलियां में भटक रह्या है । इन्द्रियां रा दास बण र दुख देख रह्या है । भोग विलास रा चक्कर में पड़ र धरम करम न भूलता जा रह्या है । परिग्रह धारण री अंध गली में पड़ र धन हूंसा सारू छल कपट कर रह्या है अर भ्रष्टाचार र विनाशकारी मारग पर सरपट दौड़ लगाय रह्या है । कांई इणरो नाम सभ्यता है ? भारत इणरी वजै स कोई धरम या सम्प्रदाय संजम सिखावणी चावै तो या बात दूजी है । कारण के आज दुनिया रा मनुष्य रा रोग, स्वास्थ्य-ह्रास अदालतां तक भी देख रह्या सब री कारणो विलासिता री अर संजम रिक्त है भगत भोगा-सक्ती है । आज-काल संजम निश्चय आवश्यकता है पण उण र कारण सारू म घणी भांत ही ध्यान सवधना है ।

इण वास्ते जिकण राष्ट्र, देश आप धरम या समाज में संजम है, वो राष्ट्र देश आप धरम या समाज घणो दूरी नी व्है गया, उणरो पतन ना व्है गया । रोम रो इतिहास जिणगी घणा विस्तार एक नया लिख्यो है— रोम रो उत्थान संजम सूं, सादगी सूं अर चमत्कारी सूं हुयो अर उणरो पतन हुयो विलासिता सूं, असंजम सूं अर फिजूलखर्ची सूं ।

सन् १९३७ में इंग्लैण्ड रा सम्राट एडवर्ड आपरा एक भाषण में कह्यो हो— संजम में शक्ति है, आ शक्ति दस

आणद री जड है। जिको सजमहीण है वो बळहीण ई व्हैला अर बळहीणो आदमी आणद रो अनुभव तो काई उणरी कल्पना ई नी कर सक।'

आज सगळा ससार में भय, निरासा अर आतंक रा बादळ छायोडा है। एक रास्ट दूजा पर स'क कर रह्यो है। इण सब रो कारण असजम इज है। जे सगळा रास्ट्रां मे सजम री पवित्र गगा खळ खळ करती ववण लाग तो रास्टा री कायापलट इज व्है जाव। सगळा रास्ट्र बळवान अर सिमरथ व्है जाव।

आज तो भारतवासी धम अर सप्रदाय भी आपरी वाणी मे सजम नी राख रह्या है। एक सप्रदाय दूजा सप्रदाय पर झूठा आरोप, निंदा अर वाक प्रहार करवा मे इज लाग्योडो है। ओ असजम सप्रदायां रा अनुयायियां म पण साती सू नी रवण देवै। ओ इज कारण है के आज सूं २५०० बरस प ला आर्यावर्त रा महा मानव भगवान महावीर साधकां न सबोधता कह्यो हो—

'इत्थ सेगए वाय समए, काय समए'

हाथा न सजम म राखो । मै

सजम मे राखो अर

महात्मा बुद्ध ॥

हत्त

हाथ सू सजमी वणो

राखो।

जिथण आवगी।

मायता री मोटा सुपातां री कुरवाणी नाम में सदाणी रो नाव मुर्दादिल अर जो ही जीवण सकल में दम्मदारी री, पण सरीर कोमट कीड़ों में पराण में सहवणा रो सो सबळी ओ है। वो मर्दां री दास है, गुलाम है।

मोड़ा री मालिक मर्द बात अर धाड़ा री नो नी मर्द पड़े। सां'री बात म लड़ाई, जिसाई भीमाई अर उणरी साथ धन मोडु। पण मर्द इसो कोई काम नीं करै। कारण वे ही मोड़ा री मालिक है काम नो है। वी मोड़ा पर असवारी करै। कारण ना जिको-दुनियां दांहियां म मोड़ा री मोत्या दीवी है—

पुंगनाम समाह (उम्मीदवार)

जिकी साहस दुनिया री सबक है वा मर्द है पर जिका इंसां री ख्याल है वा रहम है। जद साहे गुन्ना वे साय बाई जागी चाली है मर्द व रहम है रहम समय सागर दरिया पर गजब ताणनी पड़ेला, काबू राखणी पड़ला, बालपाथां री जीवणो पड़णा। उण समय घा वा मेन गवेगा—

दैया का दुनिया में कादिर जिंदगानी फिर कहां।
जिन्दगानी गर किसी ने यहु गवाही फिर कहां॥

[illegible] साम तो मर्दां रा है रहणा गा नीं। रहणा रा मोल तो [illegible] है—'समाजवाद कामिल सुजम पाठणा में पोना री गादन समादनी, पा दम आपण री सफळता है। 'सबका: समु जीव मय' वरदान में सजम दम जीवण है—सजमहीणो जीवण, मारग नीं है पण उण तरै रो सुपन मोल है।

ससार में ~ जीवै पर हुआ सगळा प्राणी पुर्ज

जीव। पण दोनां रै जीवण में जे कोई तफावत (फरक) नीं व्है, दोनां रो जीवण एक इज ढग रो व्है वांरो एक इज लक्ष व्है तो पछ मिनख अर दूजा पाणियां में फरक काई रव ? जे मानखा रो लक्ष फगत खावणो पीवणो, पग्णो कमावणो अर मोज सोक न ऐस आराम इज करणो व्है तो पछ जिनावर अर मिनख जीवण में फरक काई रह्यो ? पण जिकण मिनख रा हिरदा म जीवण रो लक्ष फगत खावणो पीवणो इज नीं व्है, पण खुद सजम सू जीवणो अर दूजा न आणद सू रैवण देवणो व्है वो खाय, पीव अर पर ओढ तो जरूर पण फगत जिदगी कायम राखण न इज। इण चीजां न आपरवा में जितरो काम व्है सक, उतरो जरूर राख।

३ जिको मिनख काम न पूगो तर पाळ सक, वो भल ई कठ ई जावो, वो दुखी नीं व्है सक भार रूप नीं व्है सक, कोई न खटक नीं सक, उणरो जिदगी फूल जिसी फारी अर खुशबूदार बण जाव। दरअसल म सजम इज मानखा रो कसोटी है। जिण म जितरो बधार सजम व्है उण म उतरो इज बधारै मिनखपणो व्है। केईक लोग बारनो चीजां पर तो पर भी सजम राख लेव ज्यू क लूखो सूखो खायल, कम खायल कपडा सीधा सादा अर कम प'रल, कमनी रम्चा सू काम चलाय लेव। पण पोता रो अदरूणो विरतियां ज्यूं के क्रोध, आवेस, अर कसाया पर सजम नीं राख सक। इण वासत भगवान महावीर जिसा मोट साधक पोता रै अनुभवा रा निचोड दुनिया रै सामन राखता कह्यो के—एक रण

१। जोधो रण में लाखां रा माथा काट सक ससार रा

राज-पाट पर कब्जो कर सक, पण पोता रा इंद्रियां पर काबू करणो अर पोता र मन न जीतणो घणो कठण है। इणा न जीतण वाळो संजमी ज्ज साचो जोधो है, ज्ण नको सूरवीर है। एक पडत बद्यो है क जो पाच इंद्रियां अर च्यार कसाया न जीत ल वो इज साचो मिनख है।

आज दुनियां रा घणखरा लोगा री निजर बहिरमुखी व्हैगी है। वै रात'र दिन अमुक अमुक चीजा न भोगवा री इज विचार किया कर। वांरो मन रूपी डांगर हाडो अमुक अमुक चीजा रै सबाग विजोग साथ इज डोलतो र्य। इसा लोग पात दुखी व्है अर पाता रा कुटुम समाज आस अर दस न पण दुख रा व्हाळा में डुबोय दवै। वांरी निजर बहिरमुखी व्हावण सू व संसार रा हरेक वेवार न, रीत भांत न अर सामाजिक प्रथा न इण निजर सू इज देख। वांरी निजर अंतरमुखी हुया बिना वा म साचो संजम नी आय सक। जिणरी निजर अंतरमुखी बण जाव वो आदमी कोई अमुक समुदाय जात कै समाज न बारली निजर सू नी देख'र आत्मा री अंदरूणी निजर सू देख। उणर साग भलाई बहिरमुखी बण जाव अर उणसू राग द्वेस रूपी कसाय भावनावा री जनम व्है। इण भावनावा र जनम सू इज असंजम वध। असंजम वध्या पछ आत्मा आपरा असली सरूप म नी रैवै। वा पुद्गलानंदी बण जाव अर वासनावा म रमण लाग जाव।

भारत रा सगळा धम सास्त्रां म आ बात भली भांत समझायोडी है क न तो मन खराब है अर न पाचू इंद्रियां खराब है। खराब चीज जे कोई है, वा है वांरो दुरपयोग अर

जीव। पण दोनां र जीवण म जे काई तफावत (फरक) नी व्है, दोनां री जीवण एक इज ढंग री व्है, वांरी एक इज लक्ष व्है तो पछ मिनख अर दूजा प्राणियां म फरक काई रव ? जे मिनखां री लक्ष फगत खावणो पीवणो, परणो कमावणो अर मौज सौक न ऐश आराम इज करणो व्है तो पछ जिनावर अर मिनख जीवण म फरक काई रह्यो ? पण जिकण मिनख रा हिरदा म जीवण री लक्ष फगत खावणो पीवणो इज नी व्है, पण खुद सजम सू जीवणो अर दूजा न आणद सू रैवण दवणो व्है वो खाव, पीव अर पर ओढ तो अवस, पण फगत जिंदगी कायम राखण र इज। इण चीजा न वापरवा मे जितरो संजम व्है सक, उतरो जरूर रास।

जिको मिनख सजम न पूरी तर पाळ सक, वो भले ई कठ ई जावी, वो दुखी नी व्है सक, अर इण नी व्है तक कोई न लटक नी सक, उणरो जिन्गी फूल जिसी प्यारी अर खुशबूदार बण जाव। दरअसल म सजम इज मानखा री कसोटी है। जिण में जितरो वधार सजम है उण म उतरो इज वधार मिनखपणो व्है। बहुत लोग खान्नो खाजा पर तो फेर भी सजम रास लेव ज्यू क लूखो सूखो खायले, कम खायले, कपड़ा सीधा सादा अर कम प'रन कमती रन्चा सू काम चलाय लेव। पण पोता री अलग्गो विरतियां ज्यू क क्रोध, आवेस, अर कसाया पर सजम ना राख सक। इण वास्त भगवान महावीर जिसा महाट साधक पोता र अनुभवां री निचोड दुनिया र सामन राखता कह्यो के—एक रण जीतो जोधो रण में लाखां रा माथा काट सक, हजार रा

जो थे सक्र रा परतख दरसण करणा चावो तो प'ला काछवा र ज्यू पोता री इंद्रियां पर काबू राखो। जठा ताईं काछव धर्म धारण नी करोला, सक्र (सुख) रा दरसण नी व्हैला।

इण तर सजम जीवण रै वासत जरूरी नी पण घणो जरूरी है। बिना सजम र पापां री ववतो भरणो वद नी रय सक। छात म सू पांणी चूवतो व्है तो आपां उणन तोड र नी नांखां, नवी छात तयार नी करावां पण जूनी छात री मरम्मत करावां। ठीक मरम्मत करायां सू चूवतो पाणी वद व्है जाया करै। आतमारूपी छात है अर उणम इंद्रिया रूपी फाडा है। उण फाडां में सू प्रभाव रूपी पाणी चूवे। इण पाणी नै सजम रूपी सीमेंट सू अटकावणो है, कारण वे अटकायां बिना छुटकारो इज नी है।

भगवान महावीर न वांरा पाटवी चेला गोतम गणधर पूछ्यो—'सजमण भते जीवे किं जणयई ?' (भगवन, सजम पाळया सू जीव न कांई मिळै ?) भगवान महावीर बोल्या—

'अणण्हयत्त जणयई'

निरोगपणा सू लाबी उमर भोगणी व्है तो सजम रसायण र समान है। सजम एक इसो सुद्ध रस है जो आतमा, मन अर सरीर न नारोग अर मस्त वणा न्व। सजम मेथी र लाडू रै ज्यू है, जिण में कडवापण तो है पण आतमा री वळ बढावण री ताक्त ह। इण वासत एक कवि कह्यो ह—'संयम बिनु घडी-यन इक्कु जाऊं' सजम बिना एक घडी ई नी जीवणो चाहिजै। भारत री सस्क्रती म धनपतियां वे राजा महाराजावां री पूजा

आछो चीज जे कोई है या है वांरो सदुपयोग । कोई ग्यानी जे इण इंद्रियां अर मन न खोट रास्त नी जावण देव अर राग-द्वेस में नो डूबण देवे वो साचो सजमी है । गीता में भगवान किसण अरजुन न कह्यो है—

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।
तयोर्न वशमागच्छेत् तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥

हरेक इंद्री र साग राग द्वेस रूपी कांटो लाग्योड़ो है। हुसियार साधक वो इज है जिको उण राग द्वेस र वसीभूत नी व्है, कारण के इंद्रियां दुस्मण नो है, दुस्मण तो राग द्वेस है ।

आ इज बात भगवान महावीर पावापुरी मे आपरा छेला-बखाण में—उत्तराध्ययन सूत्र रा ३४ वा अध्ययन र रूप मे कही है के राग अर द्वेस दोनूं दुसमण है । इणा सू जे कोई आदमी आपरी इंद्रियां आधी रास्त सो वो मिनख इण ससार माय न कमळ-पत्र र ज्यूं निरलप रय सक ।

सास्त्रां मे कछवा साधकां न चेतावणी पण दियोड़ी है । वान काछवा रो रूप देय न सावचेत किया है । भगवान महा-वीर 'सूत्र कृताङ्ग सूत्र' में साधकां नै औ सदेस दियो है—

जहा कुम्मे स अंगाई सए देहे समाहरे ।
एवं पावाइं मेहावी, अज्झप्पेण समाहरे ॥

जिण भांत काछबो डर लागण सू पाता रा अगां न माय नै समेट लव, उणोज भांत मिनख नै आपरी इंद्रियां वासनावां में सू समेट लवणी चाहिज ।

आप सहर रा मदिर में जावतो वगत बारला कानी काछवा री मूरत देखी व्हैला । इण मूरत रो अर्थ ओ है के

नै कैद कर नी कर लियो जाय।' बादशाह न बेगम री बात जचगी। दुरगादास पकड़ीजग्यो। उणर हाथां अर पगां में लोहण री सांकळां पड़गी।

उण वीर रो सरीर लोह री जंजीरां में जकड़ीजोड़ो हो, पण उणरी आत्मा आजादी रै वास्तै तड़प री ही। वो सोच रह्यो हो कै भारत न गुलाम कीकर बणायो जा सक। आज आपर जीवण में जोस ना है, खून में गरमी नीं है, कवी री भासा में कहूं तो—

वह खून कहो किस मतलब का जिसमें उबाल का नाम नहीं,
वह खून कहो किस मतलब का आ सके देश के काम नहीं
वह खून कहो किस मतलब का जिसमें जीवन न रवानी है,
जो परवश होकर बहता है वह खून नहीं है पानी है।

जवानां ऊठो, थांर ऊठणां सूं समाज ऊठसी।

रात रा दुरगादास देस री आजादी री सोचण तयार कर रह्यो हो। रात रा बारै बज चुक्या हा। च्यारूंमेर घोर अंधारो अर सरणाटो छायोड़ो हो। सगळी सगार निद्रा देवी र खोळा में विसांमो ले रह्यो हो। उणीज वगत दरवाजो खुलण री आवाज आई। दुरगादास देख्यो कै एक फूल जिसी कामट नव-जवान धीरे धीरे आग बढती आय रह्यो है। उणर एक हाथ में दीवो हो अर दूजा हाथ में तलवार। उणर लार एक सोट सिणगार करियोड़ी नारी ही। 'अरे! था कुण? गुलेनार!' साच्यो—'आधी रात र वखत बेगम अठ क्यूं आई? इणरो अठ काई काम है?' वो सोच इज रह्यो हो कै बेगम अकड़ र बोली—'दुरगादास, थू जांण, म्हं कुण हूं?'

कदई नी हुई ह, अठ तो जिणरा जीवण म सजम अर सदाचार री जोत जगमगावती दीसी उणन इज पूजनीक गिणियो है। उणरा कुळ, जात, देस क वस काना कदई ध्यान नी दियो गयो है।

राजस्थान रा इतिहास में एक ज्वळ त दिम्टात है। मुगलिया सल्तनत रा बादसाह औरगजेब भारत रा सगळा सिमाडो पर आपरो कब्जो कायम कर लियो हो पण राजस्थान रा वीर चुप नी बठया हा। उणा बादसाह री नाक म दम कर राख्यो हो। बादसाह औरगजेब री बेगम गुलेनार बडी आजाद तबियत री औरत ही। मोटा घराणा मे मिनखा री इच्छाया ई मोटी व्है। व दिन-दूणी अर रात चौगणी बधती जाव। पसी अर वासना मिनख न बरबाद कर नाख। भारत म सोना री दो नगरिया जगत मे चावी ही—एक लका अर दूजी द्वारका। पण दोन्या री नतीजो काई निकळयो वो आपर सामन है। दोन्या री विणास वासना अर असजम सू हुयो। लका अर द्वारका नगरिया, जिकी एक दिन वैभव री चोटो पर चढ्योडी ही, वासना र कारण एक दिन घोर अधारा में डूबगी। असजम र कारण दोन्या रो घोर पतन व्हैग्यो।

हा, तो गुलेनार जुद्ध रा मदान म रणबका राठोड दुरगादास री वीरता देख'र उण पर फिदा व्हैगो। सोच्यो— इण वीर न कीकर पाय सकू?' उणे मन म जुगती सोच'र बादसाह न कह्यो—

'दुरगादास बडो खतरनाक है, इणन जीवतो इज पकड

न वद क्यू नी कर लियो जाव।' बादसाह न बेगम री बात जचगी। दुरगादास पकडीजग्यो। उणरे हाथा अर पगा में लोखण री सांकळा पडगी।

इण वीर रो सरीर लोह री जजीरा म जकड्योटो हो, पण उणरी आतमा आजादी र वासत तडफ री' ही। वो सोच रह्यो हो के भारत न सुततर कीकर बणायो जा सक। आज आपर जीवण म जोस नी है, खून में गरमी नी है, क्वी री भासा मे कहू तो—

वह खून कहो किस मतलब का जिसमें उबाल का नाम नहीं,
वह खून कहो किस मतलब का आ सके देश के काम नहीं
वह खून कहो किस मतलब का जिसमें जीवन की रवानी है
जो परवश होकर बहता है, वह खून नहीं है पानी है।

जवाना ऊठो, थार ऊठ्या सू समाज ऊठसी।

रात रा दुरगादास देस री आजादी री सालण तयार कर रह्यो हो। रात रा बारे बज चुक्या हा। च्यारू मेर घोर अधारो अर सरणाटो छायोडो हो। समळो ससार निद्रा देवी र खोळा में विसामो ले रह्यो हो। उणीज वगत दरवाजो खुलण री आवाज आई। दुरगादास देख्यो क एक फूल जिसो कोमळ नवजवान धीर धीर आग बढतो आय रह्यो है। उणर एक हाथ में दीवो हो अर दूजा हाथ में तलवार। उणर लार एक सोळ सिणगार करियोडी नारी ही। अरे! आ कुण? गुलेनार!' सोच्यो—'आधो रात रै वगत बेगम अठ क्यू आई? इणरो अठ काई काम है?' वो सोच इज रह्यो हो के बेगम अकड'र बोली—'दुरगादास, थ जाण, म्ह कुण हू?'

'हां हा, जांणू क्यू 'ी, थू मुगलिया सल्तनत रा बादसाह री बेगम है। बादसाह थारा इसारा पर नाच्या कर।

'ठीक, दुरगादास, जर तो थू म्हन ओळग है पण दुरगादास, थार सांमन म्हारी एक मागणी है। आज म्हू एक मोटी उम्मीद लयन आई हू एक बडी भावना लेय'र आई हू। उम्मीद है थू नटना नो। थू म्हारी बात मानजो तो मालामाल व्है जावला, भारत रो ताज थारा माथा पर हैला अर नी नो आ तलवार थारा दो टुकडा कर नांखला।'

मिनख मौत सू डर, घबरीज, भयभीत व्है पण जिका हिम्मत वाळा व्है व मौत री आंधी आगै बिलकुल नो हिग। व हिमाळा र ज्यू अटळ रेव। दुरगादास पण मौत री भयकर ज्वाळा सू बिल्कुल नी घबरायो। उणे कह्यो— बेगम साहिबा, ओ दुरगादास थारी मांगणी सुण्यां र पछ इज कोई जवाब देय सक।' बेगम हसी रा फुवारा छोडतो बोली—'म्हारी एक छोटी सी'क मांगणी आ है के थू म्हन पत्नी रुप म स्वीकार करल। बादसाह री कोई चिंता करण री जरूरत नो। ओ तो आज इज मौत र घाट उतार दियो जासी। ओ म्हार डावा हाथ रो खेल है।' वीर दुरगादास थोडी देर र वास्तै दुविधा में पडग्यो। वो विचार करण लाग्यो— नीती काई कव है? म्हारो धम काई कव है? काई मौत रा भय सू गुलेनार री बात मान लू?' मायनै सू पटाघो पडियो—'नो, कदई नी, जिको धम न छोड द, धम ई उण न छोड द।'

जो दृढ राख धम को, ताहि रखे करतार।
जे डगमे धम को, वह डूबे कालीधार॥

वेगम तौ म्हारी माता र समान हैं। नीती सास्तर म कह्यौ है—

राजपत्नी गुरुपत्नी, मित्र पत्नी तथव च।
पत्नी माता, स्व माता च पञ्चते मातर स्मृता ॥

ऐ पाच मातावा बताई गई ह। उणमें राजा री राणी पण माता है। दुरगादास री येडधा भणमणाय ऊठी। उणे गभीर गरजना कर न कह्यौ—'श्रा थू काई कवं है गुलेनार ? भारत रौ श्रौ साल पराई नार नै जगदबा र समान माता र पूजनीक रूप मं मान। इण वासते थारी आ मागणी स्वीकार नी कर सकू।'

'काई कह्यौ ? म्हारो आ मागणी थन स्वीकार नी है ? प्रवार रैम्य लू। कामवस देख काई है ? इण काफर रौ माथौ तरवार सू उडाय दे। इणे म्हारी मागणी न ठोकर मारी है, म्हू इणर माथा र ठोकर मारू ला।' पळाक करती तरवार म्यान र बार निकळी। इतरा म एक अवाज आई ठैरजा कामवम ! खबरदार, जो तरवार आग बढाई तौ !' श्रौ कुण सेनापती ? उण झपट'र तरवार आयी फक दी। तलवार रा दो टुकडा व्हैग्या। उणे कह्यौ—दुरगा दास ! थू फरिस्तौ है, थू देवता है थारै म साचो मिनखपणो है, सजम री जात है।'

वगम चमकी अर बोली—'सेनापतो, थू अठ कीकर ?'
सेनापती कह्यौ—इण पैंगबर न माथौ नमावण नै।'

गुलेनार कह्यौ—'इतरी बे अदबी ? इतरी बे-तमीजा ? जबान सभाळ'र बोलज। थूं किणर साग बात कर रह्यौ है ?'

सेनापती बोल्यौ—'हा, एक रूळियार राड र साग। थूं काई बोल री' ही ? थनै सरम नी आवै ?' उणे साकळा तोड न कह्यौ—'जाओ भारत रा देवता जाओ, इंद्रिया रा स्वामी जाओ!'

भोग खातर दुरगादास री अनासगती देख नै एक कवि र सुरा रा तार झणझणाय ऊठ्या—

जननी सुत ऐसौ जनै जसौ दुरगादास।
बांधी मुंडाता राखियौ बिन थांभ आकास॥

सजम जीवण न महान बणाव। जीवण री व्याख्या करता आचारज कह्यौ है के जिको विकारा रे सागै लडै, सिंघ रे ज्यूं गरजती थकी अन्याय, अत्याचार अर भ्रस्टाचार सूं जुध कर, उणरो जीवण इज साचो जीवण है। जीवण रो अरथ ह—वासनावा सूं जूझणो। एक पलक इज जीवो, पण उजास करता दीपक रे ज्यूं परकास कर न जीवो। अध बळ्या छाणा (थेपडी) र ज्यूं विकार रो धवो छोडता थका सो बरसा तक जीवता रैवो तो ई उणरी कोई कीमत नी है। रथनेमी री वासना भरी जिंदगी गुजारवा री अरदास पर पडुत्तर देवता महासती राजमती कह्यौ हो—'सेय ते मरण भवे' असजमी जीवण मौत जिसौ ह, वास होणा फूल जिसौ ह, तल होणा तिला जिसो हे, जीव-होणा सरीर जिसो ह, पतवार होणी नाव जिसो ह।

सजम जीवण रो आतरिक फूटरापो ह, उणर बिना

धारली बणावटी फूटरापो फिजूल है। कागद रा फूल फूटरा भलै ई दीसो पण सुगंधी नीं देय सकै। आज री मिनख अदम्यौ फूटरापा नै भूल'र बारला थोथा फूटरापा रै लारै पागल बण्योड़ो है। इणसूं आ कवत पूरी उतरै कै— 'भगव तरी कूदगई मजब तरा खेल, छछूंदर रै सिर में चमेली का तेल।' महाकवी रविन्द्रनाथ आपरा सौंदर्य-बोध नाम रा एक लेख में लिख्यो है— 'फूटरापा नै पूरण रूप सूं भोगण वास्तै संजम री जरूरत है।' जो फूटरापा रो भगत है वो संजम अर नियम रो पण भगत है। उणरै जीवण रा कण-कण में संजम री जोत जगमगावती रवै। जे आप साचाणी फूटरापा रौ उपभोग करणो चावौ तो आपनै आपरी भोग लालसावां पर काबू राखणो पड़सी। संजम अर नियम सूं रवणो पड़सी। भारतीय संस्कृती रो साचो आचरण यो इज है। औ आपां नै सत्य अर सुन्दर रै मारफत सिवत्व कानी लै जावै। पावली जगत मांना सांच अर उठ गयां पछै मिनख आपरो अमरत्व मूल भाव अर सांती रो अनोखो आणंद अनुभव करवा लाग।

संजम रै मिठास रो रस चाखणो व्हे तो आज आज सूं इज तयार व्है जावो। आ चीज कथन अवरण सूं या सुणण सूं नीं मिळला। इणनै पावण वास्तै जीवण में आचरण करणो पड़सी। ज्यूं ज्यूं आप जीवण में संजम रो आचरण करोला त्यूं त्यूं आपनै उणरै मिठास रो पतो लागला। 'प्रत्यक्ष किं प्रमाणम्' रै मापक आ परतख अनुभव करवा री चीज है। पछै तो आपरी जबान आपोआप बोलण लाग जावला।

गुलेनार कह्यो—'इतरी बे अदबी ? इतरी बे-तमीजी ? जबान सभाळ'र बोलजै। थू किणर साग बात कर रह्यो है ?'

सेनापती बोल्यो—'हां, एक वळियार रांड र साग। थू काई बोल री' ही ? थनै सरम नी आव ?' उणे साकळां तोड न कह्यो—'जाओ भारत रा दवता जाओ, इद्रिया रा स्वामी जाओ!'

भोग खातर दुरगादास री अनासक्ती देख नै एक कवि र मुरा रा तार भणभणाय उठ्या—

जननी सुत ऐसौ जने जसो दुरगादास।
बांधो मु डासो राखियो बिन थांभ आकास॥

सजम जीवण न महान बणाव। जीवण री व्याख्या करता आचारज कह्यो है क जिको विकारा र साग लड, सिंघ र ज्यू गरजतो थको अन्याय, अत्याचार अर भ्रस्टाचार सू जुध कर, उणरो जीवण इज साचो जीवण है। जीवण री अरथ ह—वासनावां सू जूझणो। एक पलक इज जीवो, पण उजास करता दीपक र ज्यू परकास कर नै जीवो। अध बळया छाणा (थेपडो) र ज्यू विकार री धूवो छोडता थका सौ बरसा तक जीवता रेवो तो ई उणरी कोइ कीमत नी है। रथनेमी री वासना भरी जिदगी गुजारवा री अरदास पर पडुत्तर देवता महासती राजमती कह्यो हो—'सय ते मरण भवे' असजमी जीवण मोत जिसो ह वास हीणा फूल जिसो ह, तल हीणा तिला जिसो ह, जीव हीणा सरीर जिसो ह पतवार हीणी नाव जिसो ह।

सजम जीवण री आतरिक पूटरापो ह, उणर विना

वारलो वणावटी फूटरापो फिजूल है। कागद रा फूल फूटरा मल ई दाखो पण सुगधी नी देय सके। आज रौ मिनख घ्रदम्णी फूटरापा न भूल'र वारला थोथा फूटरापा र लार पागल वण्योरो है। इणमू आ ववत पूरी उतरी वै—'अजब तेरा कुदरत अजब तेरा खेल, छछूदर के सिर में चमेली का तेल।' महाकवी रविन्द्रनाथ आपरा सौंदय बोध नाम रा एक लेख में लिख्यो है—फूटरापा न पूरण रूप सू मानण वासत समम री जरूरत है। जो फूटरापा रो भगत है वो सजम अर नियम रौ पण भगत है। उणर जीवण रा हरेक काम में सजम री जोत जगमगावती रवे। जे आप साचली फूटरापा रो उपभोग करणो चावो तो आपन आपरी भोग लालसा पर कावू राखणो पडसी। सजम अर नियम सू राखणो पडसी। भारतीय सस्कृती रो साचो आकरसण ओ इज है। वो आपां न सत्य अर सुदर र सामचत सिरजत कानी ले जाय। कामणी जगत थाना साच अर उठ गया पछ मिनख आपरो अतरद्वद भूल जाव अर सांतो रो अबोली आणद अनुभव करण लाग।

सजम र मिठाम रो रस चाखणो है तो इण आज सू इज तयार व्है जाओ। आ चाज फगत हजम सू या सुणण सू नी मिळला। इणनें पावण वासत अभ्यास अर आचरण करणो पडसी। ज्यू ज्यू आप जीवण में सजम री आचरण कराला त्यू त्यू आपनें उणर मिठास री ठाह लागला। 'प्रत्यक्ष किं प्रमाणम' र मापक आ समझ व्यवहार करवा री चीज है। पछ तो आपरी जवान मीठा बोलण लाग

विवेक रो प्रकास

मानखा रै जीवण रा तार आज सूं नी पण जुग जुग सूं उळझयोड़ा है। वांनै सुळझावण खातर आर्यावर्त रा महा मानव महावीर आपांनै एक मारग बतायो है। उणां कह्यो है—साधक ! थारो मारग विवेक रा उजास सूं जगमगावतो रवणो चाहिजै, थूं ससार री अंधारी गळियां में रूलता थकां विवेक री टोर्च हाथ में राख्या कर। उणरा मगळीक उजास में थूं देख सकला कै कठै विसय वासनावां रा खाडा है अर कठै लोभ अ क्रोध रा डरावणा भाखर है, कठै मोह माया री चीकल है अर कठै घमंड रूपी काळो नाग फूंफाड़ा कर रह्यो है ? जठा तक थारै मन में विवेक री जोत जगमगावती रवला उठा तक थूं विसय वासनावां र खाडा में नी पड सकला, लोभ अर क्रोध र भाखरां सूं नी टकरावला। जे उठणो बठणो, खावणो, पीवणो, सूवणो जागणो अ सगळा कांम विवेक रा उजास में व्हता रवै तो पाप कम रा बंधण थनै बांध नी सकै। जे विवेक रो दीवो राज व्हग्यो तो पाप थनै दबाय देवला।

आचारज कुंद कुंद एक जग कह्यो है के द्रव्य त्याग द्रव्य पूजा द्रव्य माळा, द्रव्य जप-तप वगर साधनावा विवेक बिना कोई काम री नी है। व बिना विवेक री होवण सू साधक रा आत्मा न संसार में भांत भांत रा जूणां भुगतणी पड। इण साधनावा सू आध्यात्मिक जीवण रौ विकास नी व्है।

जैन धम विवेक प्रधान धर्म है। इणमें धम रा व्याख्या करवा वाळा हरेक साधना नें, चावें वा छोटी व्हो अथवा मोटी, विवेक री कसौटी पर कस न देखी है। जिण साधना म विवेक है, वा सम्यक् साधना है सुभ जोग वाळी साधना है। पण जिण साधना में अविवेक है, वा असम्यक् अर असुभ जोग वाळी साधना मानी जाव। सुभ जोग वाळी साधना पाप री नास कर अर असुभ जोग वाळी पाप में वधारौ कर, जनम मरण रा चक्कर में फसाव। विवक रा जितरी छांण-बीण, जितरी मनण चिंतण अर जितरी व्याख्या जन सास्त्रकारा कीवी है, उतरी स्यात् दूजा सास्त्रा नी कीवी है। भले ई उण विवेक री नाम जुदा-जुदा जुगा में जुदा-जुदा रह्यो व्है पण अमल में वा एक इज वात है। सास्त्रकारा आपरा जुग मे इण न यत्नाचार कह्यो है। जयणा धम्मस्स जणणी' र माफक इण ने धम री मा मानी है। आचारांग सूत्र में साफ कह्योडो है— 'विवेगे धम्ममाहिए' विवेक में इज धम है। जठ विवक है उठ धम है, अर जठे अविवेक है उठ पाप है। सास्त्रा म विवेक री जग प्रतिलेखना, जागरण, अप्रमाद वगर कई सब्द काम में आया है पण सगळां री अर्थ एक इज है। निसीथ सूत्र में

मोहग्रस्त संसार रा सगळा मिनखां नै जागण री आदेस देवतां कह्यो है—

> जागरह नरा ! णिच्चं जागरमाणस्स वड्ढती बुद्धी ।
> जो सुवति ण सो सुहितो जो जग्गति सो सया सुहितो ॥

हे मानव, जागतो रै ! जिको जागतो रवै उणरी विवेक बुद्धि वधती रवै । पण जिको आळस में सूतो रवै उण नै ग्यान रूपी धन नीं मिळ सकै । ग्यान तो उण नै इज मिळसी जो जागतो रैसी । भगवती सूत्र में राजकुमारी जयंती भगवान महावीर नै सवाल पूछ्यो— 'भगवन् ! जागतो रवणो चोखो कै सूवणो चोखो ? सूवणो आछो है या जागतो रवणो ?' भगवान पडूत्तर दियो—

> जयंती ! अत्थेगइयाणं जीवाणं सुतत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ।

जयंती ! कई जीवां री जागतो रवणो चोखो है अर केई जीवां री सूतो रवणो चोखो है । जयंती पाछो पूछ्यो—'भगवन् ! आप री इण दोवडी बात नै म्हूं समझ नीं सकी । आप दोवडी बात क्यूं फरमाय रह्या हो ? भगवान महावीर कह्यो— जयंती, म्हूं धन विवेक री भासा में बात कय रह्यो हूं । हरेक सिद्धांत रा दो पासा हुया करै अर दोनूं पासा में सचाई व्है । जिको एक इज पासा नै चटमाडा रवै वो अविवेकी है । थूं दोनूं पासा नै समझण री कोसिस करै । जो दूजा री भलाई रै वास्तै सूवतो रवै, विसराम करै, तो उण री सूवणो इज चोखो है । कारण के उणरो विसराम अर सूवणो दूजा री भलाई रै वास्तै व्है । पण जिको दूजा नै दुख देवण नै अर मेणत सूं बचण नै

मूत्र, उण रो मूवणो चोखो नी है। इणीज भांत जिको पराप कार वासते, सेवा वासते अर ध्यान वासते जागतो रवे, उण रो जागतो रवणो ई परवाण है। पण जिको दूजा री धन देन्नियां रा लाज लूंटण रे वासते, दूजा रा छाती पर मूग दळण रे वासते अर दूजा री हिंसा करण वासते जागतो रवे उण रो जागतो रवणो फिजूल है। मतलब यू के अविवेकी रो सोवणो अर जागणो दोनू खराब है।

सूवण अर जागण रे ज्यू जिंदगी रा हर काम में विवेक री प्राग घणो चाखो है अर अविवेक री खोटी है। विवेकी साधक प्रति लेख करतो थको वधणा न बाट अर अविवेकी साधक प्रति लेखन करतो थको कम बधणा ने बांधे। उत्तरा ध्ययन सूत्र में कह्यो है—

> पुढवी आउक्काए तेऊ वाऊ वणस्सई तसाण।
> पडिलेहणा पमत्तो छण्हं वि विराहओ होइ ॥

प्रतिलेखना जिसी विसुद्ध धार्मिक क्रिया सूं छ काय रा जीवां री विराधना करबा वाळो अविवेकी पाप रो कमाणी करे। उण री साधना में जे कदाच थाडो घणो विवेक आ जावै तो वो 'घुणाक्षर न्याय' रे भांत असली विवेक नी है।

जिण मिनख में विवेक आवे, उण रे जीवण रो नक्सो इज बदळ जावे। उण री चाल चलगत उण रो रहण-सहण सगळा ई बदळ जावे। इसो मिनख विवेक रा प्रकास में आपरा हर काम हर विचार अर हर बोल री परीक्षा किया रै पछे इज समाज रै सनमुख आवे। विवेक वो जादू है के वो कोई रे हाथ एक वार लाग जावे तो उण री जिंदगी इज बदळ

जाव। इण वासत इज भारत रा मुनिया विवक री बडो महातम बतायो है—

एकं हि चक्षुरमलं सहजो विवेक
स्तद्वद्भिरेव सह संवसतिं द्वितीयम् ॥
एतद् द्वयं भवि न यस्य स तत्त्वतोऽन्ध
स्तस्यापमार्ग चलने खलु कोऽपराधः ?

प'ली अर पवित्र आंख सहज विवक है। जे या कोई र खन नी व्है तो दूजी आंख है विवेक वाळा री सगत करणी। पण जे कोई र खन दोनू आंख्या नी व्है तो वरमसल म आंख्यां थको ई आंधो है। इसो आदमी जे खोटो मारग पकड तो इणमे उणरो कसूर नी है। सत अर असत री परीक्षा करवा वाळो विवक है। आछो काई है खराब काई है, खरो काई है, खोटो काई है, उपयोगा काई है निरुपयोगी काई है, करतव्य काई है अकरतव्य काई है, भला काई है, अभला काई है। इण सगळा बाता रो निरण विवेका मिनख तुरत इज ले लिया कर। उणरी निजर हंस जिसी व्है। हंस री चूच मे एक खासियत व्है। बो आपरी चूच सू दूध अर पाणी न्यारा न्यारा कर सक। साधक पण विवेक री चूच सू सत अर असत न्यारा-न्यारा कर लेव। असत न छोड द अर सत न पकड ल पण अविवकी री निजर तो कागला जिसी व्है। उणर वासत मिठाई अर भस्टो दोनू एक सरीखा है।

सेलडी रा सांठा न मिनख ई खाव अर ढार डांगर पण खाव। पण दोना र खावण म फरक है। मिनख सेलडी नै चूस न उणरो सार ल लेव अर फूतरां न फेंक देवे। पण

जिनावरा में इतरी प्रवक्ता नीं ह्वै, विवक नी व्है, जिणसूं व पूतरा ई मेळा इज साव। मिनख ग्रर जिनावर में ग्रो इज फरक है। जिनावर हजारां बरस प'ला जिण ढग सूं रवता, जिरण चीजा न खावता, उणीज ढग सू व ग्राज ई रव ग्रर व इज चीजा खाउ ई साव। उणम एक रत्ती ग्रर ई फरक नी ग्रायो। ग्रो इज कारण है क जिनावरां री न तो सभ्यता व्है, न सस्कृता व्है ग्रर न समाज व्है। पण मानखो हजारा बरसा में ग्रापरा रहण-सहण में ग्रर चाल चलगत में घणो फेर फार कियो है। उणे विवक री छागयोण सूं केई बातल चीजा छोडदी है ग्रर कई चाथी चीजा पकड लीवी हैं। सस्कृती, सभ्यता ग्रर समाज र रहण सहण रा ढाचा में मानख घणो फेर फार कियो है ग्रर ग्रो सगळो फेर फार ग्रापरा विवेक र बळ पर कियो है। इण बाबत गीर्वाण बाणी रा जांणीता कवि विवक हीणा मिनख नै जिनावर री ग्रोपमा दीवी है।

मिनख रा खोळिया म ग्रर मिनख री सरत में रवता थका इ जिण मिनख में मिनखपणा रा लखरण नी व्है विवेक री जोत नी व्है, वो सही रूप में मिनख नी है। इसा जीवण न फगत विवेक इज मिनख बणाय सकै।

एथेंस रा जाणीता बाजार में महापडत डयो जिनस तिर-काळ सावझा मैं, हाथ में दीवो लियां फिर रह्या हा। लोगा वान देख'र पूछयो—'जनाब, माथा पर सूरज चमक रह्यो है ग्रर ग्राप दीवो लेय न क्यू फिर रह्या हो ?' महापडत हँस नै पडुत्तर दियो—'मिनख न खोज रह्यो हूं।' पडुत्तर सुण'र

लोग हँमण लाग्या । महापडत पेरू बोल्यो— जिणम विवक री गोलणो नी व्है, वो मिनख र रूप म जिनावर है । अ जो हजारां मिनख अठी उठी फिर रह्या है—म्हन इणा मिनखां री जरूरत नी है । पण जिण मिनख म विवेक री प्रकास जग मगावतो व्है, म्हू तो उणन इज साचो मिनख मानू अर उण री तलास म इज दिन मे दीवो लियां घूम रह्यो हू ।' जिण इनसान में विवेक नी व्है वो इनसान नी पण हैवान है । महा पडत बडी मरम री बात कही जो आज ई चिराग र ज्यूं चमक रो' है ।

नीतीकारां कह्यो है—'विवक' दसमो निधि विवेक दसमी निधी है । धन वासत मिनख रात अर दिन अथाग मेणत कर, दौड भाग करे पण जिण धन र वासत वो इतरो दुखी व्है वो असल मे नासवान है । विवेक इज साचो धन है । जिण मिनख न विवेकरूपी धन मिळ जाय, उणर वासत दूजी चोजां फिजूल है । जिण बगत कोई साधक र मन म विवक री प्रकास फल जाव उण बगत उणरो जीवण इज अनोखो व्है जावे । घर म, समाज म, देस म अर राष्ट्र म हर जग उणरी इज्जत व्है उणरी मान बधे । कह्यो है—'विवकी वरप न प्रिय विवेकी मिनख बिण न चाव्ो नी लाग ? विवकी जठ ई है उठ ई आपर विवेक री सुसबू फलाय दे । इसी भवरा उणर म विवेक र रामभण लाग जाव उणनै

आ मैं अर आतमा री भद परख लेव । भद परखवा री इण तागत न सास्तरकारां विवेक न्यात र नाम सू आळखी है । इणी विवेक हाथ सांचा थका नमार री तुच्छ अर नासवान चीजां पर सू मिनख री मोह छूट जाव । वो आपरा कुटम, समाज अर रास्ट्र र सारू ववार जरूर राख पण मन सू निरन्तर रव । जन कवियां इण हालत न यू बताई है—

रे रे समदृष्टि जीवड़ा करे कुटुम्ब प्रतिपाळ ।
अन्तर स न्यारो रहे, ज्यूं धाय खिलावे बाळ ॥

समदरसी विवक वाळो जीव आपरे कुटम री पाळण करै पण मतन सू अळगो रव । जिण भांत एक धाय दूजा र टाबरां नै प्रम सू खवाड़, पिवाड़ अर वाँरो वाळण पोसण करै पण वा आपरा मतन मैं आ ही तर जांण वे के टाबर म्हारा नी है । म्हू तो फगत या न पाळवा वाळी हू ।

फेरा नगरी रा विराट मदान में विहार री मोटो मेळो हो । मेळा र वासत खूब तयारी व्है रा' ही । हजारा मिनख दूर-दूर सू मळो देखण न वरमाती व्हाळा र ज्यू आय रह्या हा । गौतमी नाम री एक रैं'न आपरा बेटा न लय'र फुलवाड़ी मैं फूल लेवण न गई । उणर हिरदा मैं आणद री छोळा ऊठ रा' ही । फूला न वेचण री आ सानेरी मोको वरस मैं फगत एक वार आया करतो । इण कारण वा आपरा बेटा ने फूलां री पचारो पर सुवाय र फूल तोड़ण लागी । इतरा मैं झाड़ी मैं सू एक काळो नाग निकळ्यो अर गौतमी रा सुतोड़ा टाबर न काट लियो । ज'र वाळक रा सरीर मं वहोत तेजी सू

फलग्यो ग्रर टाबर मरग्यो । गोतमी ग्राय न दस्यो तो उणरा होस उडग्या, वा फूलां री टोपली ग्राघी नाख न जोर जोर सू रोवण लागी ।

मा री ममता नै मा इज जांण । टाबर मा र काळजा री कोर व्है । मा पोत दुख देख ल, पण टाबरा रो दुख नी देख सकै । पोत फाटोड़ी पथारी पर सूय जाव पण काळजा री कोर न मखमल री सूवाळी गादी पर सूवावणी चाव । पोत फाटा चीथरा प'र नै सरीर री लाज ढाक लेव, पण हिवड़ा री जात न चोखा कपड़ा प'रावणा चाव । टाबरा र वासत मा रै मन में कितरी गजब री ममता व्है । वो उणरी ग्रासा रो दीवो व्है । पण गोतमी र ग्रासा रो दीवो ग्राज बुभग्यो हो । उणे ग्रापरा बुभयोड़ा कुळदीपक न ममता सू छाती र चेप लियो । उणरै हिवड़ा पर ग'री चोट लागी जिणसू वा पागल जिसी व्हैगी । वा लास उठाय न मतर वादिया खन पूगी ग्रर बोली—'ग्ररे मतरवादिया ! थ थारा मतरा पर गुमान राखो हो, पण थारा मतरा सू म्हारा डीकरा न तो ठोक करो ।' वेदा खन जाय न कह्यो—'ग्ररे वदां ! म्हारा व्हाला न कोई इसी दवा दो ये जिणसू इणरी मुर्च्छा टूट जाव ।' जोतसिया खनै जाय न कह्यो—'ग्ररे जोतसियां ! म्हारा बेटा री गिर-दसा देखो, वो बोल क्यू नी ? उणर काई व्हैग्यो है ?' इणरै पछ उणे देवी दवतावां न मनाया पण काई गरज नी सजी । बाळक री सरीर सड़ण लागी । उणम सू दुरगध फलण लागी । सांम पण गोतमी उणन गळ लगाय न गळी गळी, बजार-बजार, चोवट-

चावट फिरण लागी । लोग नाराज होय न उणन टवको देवता अरे गाली ! थारो वटो मरग्यो है । उणरो नस-नस में ज'र फनग्यो है । पण वा उणा री बात पर कान नी देवती अर बवती, म्हारो बटो क्य मरला ? मरला थारो । म्हार वटा न तो नीं'द आयोड़ी है ।'

यहां हुसन को सब हसते हैं, बेकारों की किस्मत पर ।
मगर रोता यहां आता बेचारों की किस्मत पर ॥

आ दुनिया वडी दुरंगी है । अठ रोवण वाळा र साग सब रोवण लाग जाव । पण उणरी दुख मिटावण री कोई कोसिस नी कर । दुनिया वाळा सूं गौतमी दुखी व्हैगी ही, निरास व्हैगी ही । इतरा म उणर काना में आवाज आई—'चवा नगरी रा मसान म एक ग्यानी आयो है सरवग्य आयो है, सरवन्तरजी आयो है, वीतराग आयो है, इमरत पावणियो आयो है, जिणरी सजीवणी वाट है । उणरी वाणी म मुडदा न जीवता करण री जादू है ।' गौतमी आ आवाज सुणी तो उणरी आत्मा म एक नवी उजास चमक्यो । उणरो हियडो कमळ र ज्यूं खिलग्यो । जठ महात्मा बुद्ध उतरयोडा हा, वा उठ जाय पूगी । समासदा उणन आता वयता अटकाई अर कह्यो— 'ओ सडयोडो मुडदो लेय न थूं कठ जाय री' है ?' महात्मा बुद्ध री दया जागी । उणा समासदा न कह्यो—'आ कोई दुखी औरत नैस, इणन रोको मत, आग आवण दो, इणन प्रकास मिळ ला अर इणरो जीवण चमकण लाग जावला ।'

गौतमी आगै आई अर महात्मा बुद्ध रा पवित्र चरणा में आपरा एकहला बेटा न राख'र हाथ जोड न बोली—'थे

सारता ! इणन इमरत दो ! पीयूस दो ! सजीवणी दो ! इणमू म्हारो डावरो साजो व्है जावला।' बुद्ध उणन धीरप दियो अर कह्यो—'ठर माता ! म्हू थन सतास मिठ जिसो काम करूला पण एक बात है, या था ये जिण घर म कोई मौत नी हुई व्है उठा सू एक मूठी भरघा सरसा रायनै आव।' गौतमी घणी राजी हुई। उणनै आसा री एक किरण मिळी। वा दौडी अर हवेल्या म गई राज म'लां म गई अर साना रा सिंघासण पर बठण वाळा लोगा न कह्यो—'म्हू थांरै दरवाज पर भीख लेवण न आई हू। कोई थ म्हारै बेटा र वास्तै मीत दोला ?' पडुत्तर म सेठ अर सामत बोल्या—'गौतमी ! जे थारो बेटो ठीक व्है तो जितरो चाहिज उतरो सोनो ले जाव, चादो ले जाव, जवारात ले जाव अर जिको चाहिज वो ल जाव।' गौतमी बोली—'म्हार सोना चांदी अर जवा रात नी चाहिज। ग्यानी म्हनै कह्यो है के जिण घर म कोई मिनख नी मरघो व्है उठा सू एक मूठी भरघा सरसो लयनै आव। म्हू थारा बटा नै ठाक कर दूला।

आ सुणता इज किण ई आसूडा ढळकावता कह्यो—'म्हारो बीस बरस रो नवजवान बेटो मरग्यो है।' किणे ई कह्यो— म्हारो जीवण धण पती मरग्यो है।' वा सोना रा म ल छोड'र घास फूस री झूपडिया मे पूगी। पण उणन मूठी भरघा सरसो नी मिळघा सो नी मिळघा। कारण के इसो कोई घर नी हो जठ कोई मौत नी हुई व्है। छेवट हार खायन गौतमी पाछी आई अर महात्मा बुद्ध न कैवण लागी—'भगवन् म्हू ! वडी

मसाणप हूं, इण नगर में घर घर फिरी पण म्हन कठई मूठी भर सरसों न मिळ्या।' बुद्ध बोल्या— गोतमी ! जद सगळा घरां में कोई न कोई री मौत हुई है तो पछ थारो घर इज कोकर बच सक ? आ कोई नवी वात नी है। जिको जनम लेव उणन मरणो पड़, जिको फूल खिल उणन कुमळीजणो पड़, जिको सूरज उग उणन आथमणो पड़ै। जनम धारण करन कोई चाव क म्हू अमर बण जावू तो आ वात असभव है। काळ तो ससार रा सगळा प्राणिया पर घूम्या कर। ससार री कोई ताकत उणन रोक नी सकै। इण वास्त थन दुखी नी होवणो चाहिज। तू थारो कत्तव्य निभायो है अर आग ई आपरो कत्तव्य न समाळ। मोह में पड न फिजूल दुखी मत व्है। थन थारो भविस्य ऊजळो बणावणो चाहिज। थार बेटा री मौत स थन सिक्षा लेवणो चाहिज। एक दिन थन ई मरणो है। इण वास्त हमसा चोखो काम करणो चाहिज।

महात्मा बुद्ध री हीया न परसण वाळी वाणी सुण'र गोतमा री मोह में सूतोड़ो मन जागग्यो। उणरो अतरदृस्टी उघड़गी, मोह माया टूटगी अर चिता मिटगी। उणे तुरत इज आपर पूत री लास उपाडी अर मसाण में जाय न दाग दे दियो। उण आपरो भावी जीवण ऊजळो बणावण री तयारी करली अर पाछो महात्मा बुद्ध र चरणा में पूगगो। उण 'बुद्ध सरण गच्छामि, सघ सरण गच्छामि, धम्म सरण गच्छामि' रो तीन मूत्री मत्र अगीकार कीधो अर बौद्ध सघ म भिक्खुणी बणण सारू अरदास कीवी। महात्मा बुद्ध उणन दीक्षा दे

दी। आग जायन गौतमी बौद्ध संघ रो घणो प्रचार कीधो। गौतमी न विवेक रो प्रकास मिळ चुक्यो हो सो उणन जगत री वासनावा बांध नी सकी।

सो साथियो! विवेक री इण महाजोत न प्राप्त करो। विवेक आपने जीवण में साचो मारग बतावला। आप चावै धार्मिक क्षेत्र में व्हो, सामाजिक क्षेत्र में व्हो राजनतिक क्षेत्र म व्हो अथवा आध्यात्मिक क्षत्र में व्हो, विवेक आपन प्रकास देवला। भगवान महावीर कह्यो है—

पन्ना समिक्खए धम्म तत्त

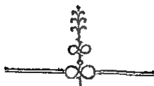
आपरी सत अर असत विवेक वाळी बुद्धि सू धम तत्व री व्याख्या करो। सास्त्रा म प्रकास देवा री ताकत है, पण सास्त्रा रो अथ तो आपां रा बुद्धि सू इज समझी करणो पड़ला। इण वासत नीतीकारा कह्यो है—

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोतिकिम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य, दपण किं करिष्यति॥

जिणर खने पोता री विवेक बुद्धि नी व्है, उणन सास्त्र पण कीकर उवार सक? जिकी आख्यां सू आंधो व्है, दरपण उणर काई काम आय सक?

इणोलए आपा न आपाणी विवेक बुद्धि सू काम करण रो अभ्यास करणो चाहिज। आपा जद दूजा रै भरोस पर रैंया, आपणी अक्कल सू नी सोचा, आत्म विस्वास न खोयां तो दूजो आदमी आपणी हालत सू अजाण होवण सू आपा न खोटी सलाह देय सक। रूढिया र चक्कर में फँसाय सक।

इण वासतै आज दुनिया में हर जग विवेक रो राज होवणो चाहिजै। विवेक री परवा किया विना कोई भी धर्म शास्त्र के विचार धारा नी तो आगे बढ सकी है अर नी आगे बढ सकला। इण वासतै विवेक मानव जीवण सारू प'ली अर जरूरी चीज है। इणनै स्वीकार कर नै इज दुनियां सुख रा दरसण कर सकै। मरघट नै इज सुरग बणाय सकै। इणनै गळै लगाय नै इज जिनावर मिनख बण सकै अर मिनख देवता बण सकै।



धर्म री मर्म

आर्यावर्त, धम री मूळ धरती मानी जाव। अठै जुग जुग सू धम रूपी गगा लोगा र हिरदा में वैवती रही है। इण गगा बार जीवण नै भरस, समरस अर माठो बणायो मन अर मगज न पवित्र बणायो। धम रा जोर सू इज लागा बहिरमुखता छोडी, वासनावा रा जजाळ सू निकळया अर सुद्ध चिद्रूप आत्म-सरूप मानी आग वध्या। धम जीवण रूपी भ्राड री फूटरो फूल है। उणसू विचार विरतो अर वरताव मे सुधारो व्है। उणरा फूटरापा अर सौरम मे इज रास्ट्रीय लोक जीवण री फूटरापो अर मिठास छिप्योडो है। धम आत्मा री आध्यात्मिक सगीत है। उणरी मिठासभरी सुर ल'रिया हिमाळा सू कन्याकुमारी ताई इज नी अटव सू कटव तक इज नी, पण ससार रा सगळा रास्ट्रा म अर सगळा खडा में गूजे है। धम आत्मा नै परमात्मा तक पैजावण वाळो भोमियो है। उणे मानव जीवण न विकास अर प्रगती री प्रेरणा दीवी है। धम विना मानव समाज री कल्पना इज थोथी है। धम

इज समाज री मगज है। समाज रा जीवण मे धम री कीमत प्राण वायु जितरी है। मानव समाज री व्यवस्था अर प्रगती वासत धम आसीरवाद रूप है। धम समाज अर रास्ट्र तक री सगळी उळझणा नै सुळझावण री तावत राखै। तो काई आज रा जुग मे इसा धम री जीवण मे कोई जरूरत नी है? आपण सनमुख आज औ एक सुळगतो सवाल है जिणरा जवाब पर आज आपा नै विचार करणो है।

धम री पुराणो इतिहास वाच न आज रा घणकरा वुद्धि-वादी धम न बुरी तर सू भाग। व नफरत सू कव के जिण धरम आपाण रास्ट्र अर समाज री सत्यानास करायो, जिण धम भाई भाई र आपस म खून खराबो कराई जिण धम लाखा आदमिया न मरवाय नाख्या, जिण धम उण जमाना रा महापुरसा न पगा नीच रगदोळया जिण धम अलेखा सब छाया न पराधान बणाई, जिण धम ससार मे अधसिरधा, थोथी मानतावा अर खोटी रीत भात मानखा पर लादी, जिण धम हजारा मिनखा न लडाया र ज्यू आपस म लडाया जिण धम परिग्रहवाद न धम रै नाम पर फूलवा फळवा दियो जिण धम विस्वासघात अर अन्याय अत्याचार सू कमायोडा धन पर पुन री छाप लगाई, जिण धम छळ, प्रपच, पाखट व्यभि चार अन्याय, अत्याचार अर गुनामी जिसा पापा री पोसण कीधो जिण धम मिनख री मिनखपणो लूट न उणन दानव बणाय दियो जिण धम पडा, पोपा ठगा पुरोहिता भगता अर मठमुल्ना री व पाखडिया री मदद कीवी, जिण धम फगत ईस्वर री चापलूसी करण सू पाप माफी री फतवो दे

दियो ? तो काई इसा धम न ससार में रवण दियो जाव ? काई इसा धम न ससार मे कोई जग दो जाव ? नी, नी। इसो धम तो वेगा सू वेगो खतम व्हैणो चाहिजे। इसा अनेका सवाल धम री अडा उसेळण मे लाग्योडा है। पण सोचणो ओ है के धम ससार मे क्यू आयो ? काई धम ससार में बुराइयां बढावण न आयो है ? बात दरअसल म आ है के लोगा रो नासमझी अर स्वारथियां री चालबाजी र कारण धम आज इतरो बदनाम हुओ है। नी तो धम तो कल्याणकारी है, मगळकारी है अर जगत न साति रो सदेस देवण वाळो है। जे कोई अन्यायी धम र नाम पर दुनिया में अत्याचार करतो व्है तो इणम धम रो काई दोस ?

एक दयाळू आदमी केई गरीब अर भोळा मिनखा न एक रतन दीनो जिणसूं व सुख री जिंदगी बिताय सक। पण जे व उण रतन र कारण रतन सू इज आपस मे माथा फोडण लाग, एक दूजा री कपाळ किरिया करण लाग तो इणम उण दयाळू आदमी रो काई दोस ? ठीक आ इज बात धम रै बारा मे है। जे काई महापुरख ससार री प्रजा न धमरूपी रतन दीनो तो प्रजा न उणसू फायदो उठावणो चाहिजतो, पण जा प्रजा उण धम र नाम पर आपस म थूक फजीतो करण लाग, एक दूजा रो माथो फोडण लाग तो इणम उण महापुरख अर धम रो काई वाक ? ओ दोस तो प्रजा री नासमझी रो है। कारण के उणे धम रो सदुपयोग नी कियो। धम तो मानखा नै दोसती रो पाठ पढायो है, पण मूरख लोगा

रणस् वर रो पाठ पण भणवा में कसर ना राखी। धम रा पाया पर जगत भर मुरग री परपणा हुई ह, तो दूजी कांनी मूरख लोगा आपर मूरखपणा रै कारण नरक री परपणा पण कायी है। प्रजा नै धम री लाभ उठावणौ चाहिजै पण प्रजा आपरा अकल री कमी रै कारण मजज री दवाळी काढ'र बसाडौ कर नांख तो इणमें धम री जवाबदारी कीकर व्है सक ? किणी चीज री मूरख प्रथा जे आपरी मूरखता र कारण दुरुपयोग करै तो उण चीज न दज मिटा न्हकणी यो कठा री डाह्यापणो है ?

घणरागी वेमारियां पट री गडबडी सू हुया कर पर इण वेमारियां री खरी कारण मिथ्या आहार विहार है। आहार सू वेमारियां है तो आहार न बन्द करणो चाहिज क पट न दज खतम कर दणो चाहिजै ? या दज हकीगत धम र बाबत है। धम र नाम सू बुराइयां बध तो कांई धम नै दज नाम कर दयणो चाहिज ? धर्म रा नास सू बुराइयां मिट नी सक। जिण तर बेमारी सू बचण रै खातर आहार विहार में सुधार करणो चाहिज, ठीक उणीज तर धम र नाम पर होवण वाळा झगडा, अत्याचार, अन्याय, जुलम वगर बुराइयां नै मिटावणी चाहिज। धम न मिटावण री बात विलकुल गरवाजब है।

म्हन अठ एक दाखलो याद आव। एक सै'र में एक वेपारी रहती हौ। उणर सात बेटा हा। व सातू अक्कल रा दुसमण हा। एक वगत बो वेपारी बेमार पडग्यौ। उणर पेट में भयकर पीडा व्है री' ही। बेटा विचार कियो के पिताजी र पट री पीडा री कांई इलाज करणो चाहिजै ?

प'लो सपूत बोल्यो—'रूपला माई न बुलाय न मालिस करावणी चाहिज जिणसू पेट रो दरद मिट जाव ।' दूजोड़ो बोल्यो—'ग्ररे ! उरटी री दवा देवण सू मिनटा म पेट ठीक व्हे जासी। पेट रा दरद वामन विरेचन ग्रचूक दवा है।' इतरं तो तीजो बोल्यो—'पेट री पीड़ा वासत हिंगाष्टक रामबाण ह।' चौथो बोल्यो—'भाई ! इसो बमारी में तो कोई चोखा वद न बुलाय न पिताजी रो इळाज करावणो चाहिज। पाचमें कह्यो—वदा री जमांनो बीतग्यो—कोई हुसियार डाक्टर नै बुलावणो चाहिज।' इतर तो छट्ठो उणरी बात काटतो बोल्यो—'डाक्टरां सू भाई धूड़ व्ह ? म्हन तो उणा पर एक रत्ती भर विसवास नी ह। होमियोपथिक ल्लाज रोगां री जड न मिटाय सक ह। इण वासत वो इळाज म्हणी चाहिज। इण तर सू उण सबा र ग्रापस में भोड होवण लाग्यो। थोडी देर म व गाळा राळा ग्रर जूतम पाक पर ग्रायग्या। सातमा वटा नै ग्रकल थोडी वधार ही। वो एकदम उठ्यो ग्रर मायन सू तरवार लेय न ग्रायो। उणे तरवार म्यान में सू बार काढी ग्रर कह्यो—'भाइयो ! इण सगळा भगडा री जड पिताजी ह। य जीवता रह्या तो फेर पेट दूखणो ग्रावला ग्रर ग्रापण ग्रापस में भगडो पण व्हला। इण वासत पिताजी नै इज खतम कर देवणा चाहिज, सो न तो वासडी रव ग्रर न वसली वाज। पिताजी र मरण सू भगडा री जड इज मिट जावला।'

उण नालायका ग्रापरा बाप न मारयो या राख्यो म्हा तो खबर नी पण ग्रा बात तो सौ टका सही ह कै सगळा ग्रक्कल रा दुस्मण हा। व बात री जड ताई नी पूग सक्या।

ठीक इणीज हालत आजकाल रा बुद्धिवादियाँ री है। वारा धम र बाबत इणीज भात रा विचार है। जिण धम आप र ज्यू मानव जात री पाळणा-पोसण कीधो, रक्षा कीधी, उणरी विरता विचार अर वेवार में सुधार कीधो, जिणे आपरा पर घणा उपकार कीधा, उणने इज आपाँ आज आपाँ री सुरक्षा र कारण खतम करण न तयार हुआ हाँ। धम बाबत विरोध करन आज उणरा औगुण बताय रह्या हा। मथाल री जड़ ताई नी पुग न पानड़ा न इज पकड़ रह्या हा।

ज कोई चोर भींत र लार छिप्योड़ो व्है तो भीत न ना पाड़ी जाव, पण चोर न पकड़यो जावे। ठीक इणीज भात आज धन रा आट मे कई र रावियां पणप री' है तो उण अराविया न ढूंढ'र मिटावणी चाहिज। पण धम न मिटावण री बात नी करणी चाहिज। नाक पर माखी बठी व्है तो समझदार आदमी नाक काट न नी फक पण माखी न उडावद। इणीज भात धम पर अधम री पाप री, अंध विसवास री पाखड री अर रूढियां री मल जमग्यो है तो समझदारां रा है क उण मल न साफ करणो चाहिज नी क धम न इज साफ करण री बात सोचणी चाहिज।

आज ससार में जितरा इ धम है वार आरम्भ र ईस्वी है, प्रेम है अर वर है। इणरो कारण ढूंढ्यो जाव तो मालम पड़सी के वारा वाग दसा अर काळां म उण वगत रा अवस्थावा र माफक इज धम आपरी सरूप दीनो है। जुदा जुदा धर्मां री प्रेरक री लक्ष्य देख्यो जाव तो उणा में कोई

फरक नी है। फरक जिको है वो ऊपरला किरिया करम मे, आचरण मे पूजा पाठ रा ढग मे अर धम सास्त्रां री भासा मे है। श्रो फरक यारा न्यारा देस, काळ अर अवस्थावां रै कारण वाजब इज है। तीथकर र उपदेसा अर सदेसा म देस काळ र कारण घणो फरक निजर आव। चव चोवीसी रा तीर्थंकरां री धम किरियावां अर आचरण मे बो'ळो फरक है। इणीज भांत धम री थरपणा करवा वाळा आप आप रा जुग मे देस काळ र माफक कोई बात पर घणो जार दियो है तो कोई पर धम। इणरो ओ मतळब नी समझणो चाहिज क धम जनता न मापस मे लडावणी चाव। इण वासत आपां पण मूरख्यां र ज्यू जो धम रा निंदा कराला तो आपणी गिणती ई इण वेपारी रा सात बेटा साग व्हेला। कारण क आपा बात री जड़ तक नी पूगा। दूजा मबदा मे सरप न नी पकड़ा पण सरप रा दरडा पर लाठ्यां पटका हा।

जिया लोग धम न मिटावण री तारुत राख मान ससार मे फल्याडी बुराइयां न मिटावणी चाहिज। इणसू सारी दुनिया मे मा न मचला। पण आ बात फगत सुणण म इज चोखी लाग, वेवार में नी उतर सक। कारण श्रो के जिण मिनख र मन मे थोडी घणो ई चासी विरती व्हेला तो वो धम सू आघो नी रय सक।

आ बात व्हे सक के धम रा कोई एक बारला रूप न मिटाय दियो जाव पण जूनो रूप मिटता इज धम कोई न कोई नवो रूप धारण कर लला। जूनो कपडो फाटता इज धम

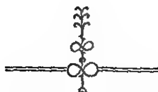
कोई नवो कपड़ो प'र न आपण हिरदा म खेलण लाग जावला। उणरी चोळो बन्ळ जावला पण उणरी नास नी व्हे सक। जिण जिण मुलकां में धम न मिटावण री कोसिस हुई, उठ असफळता इज मिळी। चरच नैं मिटाय दो तो उणरी जग लनिन री कबर ऊभी व्हैगी। सिरधा, भगती वगर ससार री अमर भावनावा है इणा न मिटाई नी जाय सक अर जठा तक अे भावनावा रवला उठा तक धम नैं मिटावणो असमव है। धम न नस्ट करण रो मतळब है मानखा रा हिरदा न नस्ट कर देवणो, मानखा न भावनाहीणो बणाय देवणो। भावनाहीणो मिनख बुद्धिमान व्हैता थका ई सतान व्हे जाव अर बुद्धिहीणो मिनख भावुक होवता थका ई हैवान बण जावै। मिनख म नी तो सतान बणणो है अर न हैवान, उणन तो इसान बणणो है अर इसान बणण वासत धम री घणी जरूरत है, कारण क मिनख में जो जिनावरपणो अर दानवता है, उण पर अकुस राखणो धम री इज काम है।

इण वासत धम री मूळ बात न समझो अर सगळा धर्मां रा छिप्योड़ा सत न स्वीकार करो। सगळा धर्मां में एकता रो बीज बोयो जाव तो धम सू कल्याण रो रस्तो खुल जाव। मानखो धम सू घणो फायदो उठाय सक।

इण वासत धम री जरूरत बाबत तो दो राय व्हे इज नी सक पण उणर सदुपयोग अथवा दुरुपयोग रो भार उणरा मानण वाळा पर है।

जे आपा धम रा नाम पर लड़ाई झगड़ा नी करा अर —

आप आपरा धम में अहिंसा अर सत रो जथाजोग पाळण करा तौ धर्मा न सफळता मिळ सक। उणा म मानखा रौ कल्याण करवा री ताकत वध सक। आ बात व्हे तो धम ससार में सुरग रौ फूटरापो धरती पर उतार सक।



जीवण रो इमरत

भारत री संस्क्रती पोत इज एक विराट संस्क्रती है। हजारां बरसां सूं गंगा री निरमळ धारा र ज्यूं आ मानखा र हिरदा म वहती रही है। आ मिनखा रा दिल अर दिमाग न पवित्र बणाय री' है। मानखा री एकता न सबळ बणाय री' है। भारत री संस्क्रती मिळण अर संगम री संस्क्रती है, मिळाप अर सम्मेलन री संस्क्रती है। जो विचारधारावां भारत में आई, वा सब न खुद में मिळाय नै आपरा लक्ष धानी बराबर वहतो रवणो इण संस्क्रती रो ध' रह्यो है। न्याय, सांख्य, वसैसिक, वेदांत, मीमांसा, बौद्ध अर जैन जितरा ई सास्त्र है, वांर आचार विचार मे चाव जितरो ई फरक रह्यो, पण उण फरक में ई सम भाव है। अनेकता में ई एकता है। भेद में ई अभेद है। जे आपां इण संस्क्रतियां अर सास्त्रां नै लगन सूं देखां तो आ बात दिन रा उजाळा र ज्यूं साफ दीस है के सगळा सास्त्रकारां सत न घणो मान दीनो है अर उण न जीवण रो इमरत है।

सत पोत इतरो बडो है के उणरी अपमान कर नै संसार म कोई आदमी जीवतो नी रय सकै। दुनिया रा मोटा सू मोटा विचारक, सास्त्रकार, रुयो, बळावार, महात्मा, तीर्थंकर अर पगवर सगळा ई सत री सेवा करन इज इतरा ऊचा पद पर जाय सक्या है। सत बिना आखी दुनिया अधारा म है। दूजा सब्दा मे सत रा पाया पर इज सारो ससार टिक्योडो है। दुनिया री वेपार, वेवार अर नीती नियम सत रा आधार पर इज चाल है। इण वासत पडतां सत री म'मा गावता लिख्यो है—

सत्यन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रवि ।
सत्येन वाति वायुश्च, सत्य सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

पुराणकारा री कवणो है के आ धरती सेसनाग रा फण ऊपर टरयोडी है। केई लोग दूजी कल्पना पण कर। पण वेदव्यास री कवणो है के आ धरती सत पर इज टिक्योडी है। सत रै कारण इज आभै मे सूरज चमक सत र बळ पर इज ठाडो, धीमो अर सौरभ वाळो पवन चाल।

आग मे सू गरमी निवाळदी जाव, पाणी मे सू ठडक काढली जाव, माटी मे सू निपजपणा री नास कर दियो जावै, सूरज सू उजास अळगो कर दियो जाव, तो पछ कोई उणा न आग पाणी, धरती अर सरज रै नाम सू नी पुकारला कारण के वा म जो सत हो, प्राण हो, मूळ तत्व हो, वो निवळग्यो। जिण तरै सू सरीर में सू प्राण निवळग्या पछ उणन कोई जीवतो प्राण नी कव, उणीज तर ससार री सगळी चीजा मे सू सत निवळग्या पछ व आपरा असली नाम सू नी ओळखीज।

मानखा जीवण म अर साधना रा क्षत्र म, हरेक जग ज्यू के सामाजिक, आर्थिक, राजनतिक, धार्मिक सास्कृतिक अर सक्षणिक बगर काई पण ठिकाण सत नी व्है तो इण मानव जीवण या साधना री कीमत फटी कोडी र बराबर ई नी है।

सत एक पारसमणी है जिणरो खेंडवो लागता पाण मानव जीवण असली सोनो बण न चमकण लाग जाव। जे किणी भिखारी या कगाल सत न स्वीकार कीनी तो उणरा जोर सू वो पूजनीक अर सत सिरामणी बणग्यो।

पण सत मानखा री कसौटी पण है। वो जिणन मोटो बणावणो चाव प'ली उणरी पूरी तपास कर इणर पछ इज वो उणन समाज मे इज्जत दिराव। हजारा बरस प लारी एक पुराणी कथा है—अरहनक सत रो परम भगत हो। उणरी रग रग में सत समायोडो हो। वो धन माल, कुटम परिवार, इज्जत आबरू अर प्राणा तक न सत र सनमुग्न मामूली गमझतो। आजकाल रा मिनखा जिसो व्हैतो तो थोडोसीक आफत आया सू या धन रो लोभ मिळण स सत सू डिग जातो पण वो तो धम पर कायम रवण वाळो हो। वो एकर चपा नगरी सू जहाजा में माल अर'र आपरा साथियां र साग वपार करण न परदेस जाय रह्यो हो। मारग में एक पिसाच भयकर रूप धारण करन आयो अर कवण लाग्यो—हे अरहनक, थू समझ जा, थू जा सत री पूछडो पकड राख्यो है वो सब भूठो है, ढूग है, उणमें कोई सार नी है। इण वासत इण नकली सब्द न छोड द।' अरहनक र मन पर पिसाच री वात रो कोई

असार नी हुयो । वो आपरा सत सूं विल्कुल नी डिगो । इण सूं पिसाच घणो नाराज हुयो अर जहाज उलटण री डीऊ करण लाग्यो । उण कह्यो—'अरे धम रा दूमी, थू हाल तक ई मानजा नी तो थारे साग थारा अ निरदास साथी ई मारया जावला । थू पगत इतरो कैयदे कै म्हारी मानता झूठी है ।' अरहनय रा साथी घबरीजग्या । वे कवण लाग्या—भाई, यो तो आपतकाळ है, 'आपत काळे मरियादा नास्ति ।' जबान हिलावण में थारे कांई लाग ? थारे साग थू म्हाने ई क्यूं मरवाय रह्यो है ? पण वो ई अरहनय हो, आत्मा री अमरता री सन्देस गिर व प्रवचन सीख चुक्यो हो । 'नन छिन्दति शस्त्राणि' री पाठ उणरै रूं रूं में रमग्यो हो । वो आछी तरै सूं जाण हो कै आत्मा में सूं सत निकळणो सरीर में सूं प्राण निकळण रै समान है । उण आपरा साथियां नै सत री मनुष्य बतायो अर पाछ ई सत पर कायम रह्यो । पिसाच उणरो बाळ ई बांको नी कर सक्यो, उल्टो उण सतवादी र चरणा रो सेवक बण र हाथ जोड र वरदान मागण री कवण लाग्यो, पण उणनै कोई वरदान री जरूरत नी ही । उणनै तो पगत सत री जरूरत ही । इण तर सत री कसौटी पूरी हुई अर पिसाच राजी होय नै उणरो जयकार करतो पाछो चालतो बण्यो ।

सत पगत वो इज नी है के जिको वाणी ... जाव । सत तो मन सूं सोच्यो जा सकै ... अर आतमा सूं आचरण ... इन भारत रा ... हुयो है

'यद् भूत हित मत्यन्त मेतत सत्य मत मम'

जो जीव मात्र र वासत कल्याणकारी व्है, उण सत नै इज म्हू स्वीकार करू। सत री व्याख्या करता उत्तराध्ययन सूत्र रा टीकाकार ग्राचारज सांति सूरि कह्यो है—

सद्भ्यो हित सत्यम्

जो प्राणिया र वासत हितकर व्है वो इज सत है।

ग्रठ एक वात विचारणा जोग है। समभ्लो एक चोर है, वो एव के चोरी करणी म्हार वासतै फायन्दमद है। एक दारूडियो कव के दारू पीवणो म्हारै वासतै फायन्दाकारक पडला। चोरी करणी फायदाकारक है—आ बात क्यण वाळो ग्राग्मी इण वात न उठा तक इज कवला के जठाताई वो पकडयो नी जाव ग्रर उणर जूत नी पड। पण जद वो पकडयो जाव ग्रर मार पडण लागै तो स्यात वो ग्रा बात नी कवला। एक चोर दूजा र घर चोरी कर ग्रर कोई दूजो चोर उण चोर र घर इज चोरी कर तो पलो चोर मा बात नी कवला के चोरी करणी फायदामद है। इण तरै सू ग्रापा कय सका के चोरी करणी हितकर नी है। इणोज तर दारू पीवणो ई फायदामद हावतो तो सगळी दुनिया उणर लारै पड जावती। पण बात ग्रसल में इणसू उल्टी है।

सगळा र वासत हितकर वचन, ग्राचरण, विचार या तत्व रौ नाम इज सत है।

दुनिया म जित्तरा ई धम है, सास्त्र है, वाद है, पथ है या सम्प्रदाय है सगळा ई सत न लेय न चाल। कोई पण सत नै छोड न नी चाल। जन धम 'त सच्च खु भयव' कयन सत न,

भगवान री आपमा दी है । वेदा मे—

सत्यमेव जयते नानृतम सा मा सत्याभित ।
परिपातु विश्वत ' (सत म्हारी रक्षा कर) ।

कह्यो है । बौद्ध धम में यम्हि सच्च च धम्मो च सो सुखी' (जिण में धम अर सत है, वो इज पवित्र है) कह्यो है । राष्ट्र पिता मह त्मा गाधी तो सत न आपरो इस्ट देवता मान राख्यो हो । उणा तो अठा तक कह्यो हो के जे देस मे एक ई आदमी पूरो सतवादी व्हे तो भारत आज इज स्वतत्र व्हे जावै । इसो वारो पक्को विसवास हो ।

भीस्म पितामह आपरै प्रण पर कायम रवता थका आपरा वचन न सत सू निभायो । श्रो सत री सुळगतो दाखलो है ।

एक नावडियो आपरी भूपडी मे वठ्यो है । बारै सू आवाज आव—एक पावणो थारै दरवाज पर ऊभो है । नाव डियो झूपडी रै फाड मायन सू देख तो उणनै कौरव कुळ रौ राजकुमार सद्यो निजर आव । वो सोच के म्हारा धन भाग जो आज राजकुमार म्हार दुआरै आया है । 'क्यू गरीबपरवर, आज इण गरीब री भपडी ताई किया पधारणो हुयो ?' सुदास पूछ्यो । राजकुमार बोल्यो—'सुदास, आज म्ह थार दुआर पर एक आसा लयर आयो हू, एक भिखारी वण'र भीख मागण न आयो हू ।' सुदास कह्यो—'भरतकुळ रा राजकुमार, सोन री सिंघासण रा मालिक, आपरा वळ अर वभव र आग मोटा-मोटा राजवी पाणी भर । इसा सामरथ होवता थका ई आप म्हार धन काई मागण न पधारया हो, महाराज !'

'सुदास काई बताऊं ! अ म्हू सत्यवती नै पिताजी (राजा शान्तनु) देखी है व उणसू ब्याव करणो चाव, पण पिताजी न सक है के उणरी सन्तान राजा नी बण सकला। ध्यान मौ सब थारी इण पण कियोड़ो हू। म्हू आज सू प्रण करू क म्हू राजगादी रो मालिक नी बणूला। सुदास, थू म्हारी बात पर विसवास राख।'

भला सोचो कठ तो आज री मानव अर कठै थो राजकुमार ! इण जमाना रा सपूत तो पिता र सुख खातर आपरो स्वार्थ छोडणो तो आघो रह्यो, काम पड़्या पिता नै इज छोड द। अ तो गांगेयकुमार जिसा नरधार हा कै जिणी पिता र खातर राजपाट इज छोड द।

'राजकुमार सुणो, दुनिया में इसी हुवै है जिको पोता री सन्तान न सुणी नी दखणी चाव। थार आ बातो क म्हू तो राजपाट छोडण न तयार हू, पण आपणा खानदान री चीज न कदैई बरदास्त नी करैला। व म्हारा वंश रा वफादार सन्तान र मना सू राज सोम रखैला। का राजकुमार म्हारो कहणो गलत है?' सुदास एक सांस में इतणी बात कहदी।

गांगेयकुमार बोल्यो—'सुदास, थारी बात ठीक, सही है। ले म्हू आवण भर कुंवारो रहू ला, जिणसूं पिता अर माता सत्यवती री हक र काई खतरो नी होला।'

मो हो मोसम री प्रण, अ रा प्रण।

गागेयकुमार रौ नाम बदळ'र भीस्म पितामह रै नाम सू उणन जग-जाहिर कर दियो ।

जठ सत व्है, उठ इज निडरपणो व्है । सत अर निडरपणो भाई बन है । अ दोनू साग सागै इज रव ।

महाभारत रो जुद्ध बद व्हैग्यो हो । फगत भीम र साग दुरजोधन रो गदा जुद्ध बाकी हो । दुरजोधन तळाव रा कमळो में छिप्योडो हो । तळाव री पाळ पर भीम अर नकुल फिर रह्या हा । रीस सू वारा मूडा राता व्हैग्या हा । उणां कह्यो—'अरे, श्रो कुण कुळ कळक, डरपोक, कायर, पापी, तळाव में छिप्योडो बठ्यो है ? यू छिप ने बैठता थन लाज नी आव ?' दुरजोधन चुपचाप सुण रह्यो हो । आज उणरो चेहरो कुम्हळीजियोडो हो । सूरज भगवान अस्त होवण वाळा हा के दुरजोधन तळाव र बार निकळ्यो । उणर मन मे एक आवाज हुई—जे थू जीव बचावणो चाव तो युधिस्ठर कन जा, उठै थन साची सला मिळ ला । दुरजोधन रा पग आप सू आप धमराज र तबू कानी आग वढिया । धमराज उणरो बडो सत्कार कियो, अर पूछ्यो—बोल भाई दुरजोधन ! कीकर आया ? आज तो घणा दिनां सू मिळ्या । जे थू आज ई सुलह करणी चावतो व्है तो भगवान किरण र कह्योडा वचना मापक म्हू आज ई तयार हू । दुरजोधन बोल्यो—'म्हू आज आपरे साग सुलह करणन नी आयो हू, पण एक सलाह लवण नै आयो हू । बात आ है के काल भीम रे साग म्हारो जुद्ध ।। । म्हन आप कोई इसो उपाय बतावो जिणसू भीम

हार जाव अर म्हारो बाळ ई बांको नी व्है।'

माइया! एक विचार करण जोग बात है। आज री कोई राजनीतिज्ञ व्है तो दुरजोधन नै इसा जोरदार सलाह देवतो के उणन इ घणा दिना ताई याद रवतो। पण आग तो युधिस्ठर हो। सतवादी युधिस्ठर! जिको राजनीति में ना पण सत अर न्याय माय चालतो। उण विचार कियो—'सत्ये नास्ति भय क्वचित' सत न कठै ई डर नी है। दुरजोधन म्हार ऊपर विसवास लयन आयो है तो इणन सांची सल्लाह देवणी चाहिज।

युधिस्ठर कह्यो—'भाई दुरजोधन, उपाय तो थार घर मे इज मौजूद है। थू मा गांधारी रन जा वा पुरव पतिव्रता है। जे वा थनै निजर भर न देखल तो थारो सगळो इ सरीर वजर रो बण जावला। पछ इन्दर री वजर अर भीम री गदा थारो बाळ ई बांको नी कर सकला। पण आ ध्यान राखज के जिकण अग पर उणरी निजर पड़ला वो इज वजर रो बणला।'

एकण कानी भाई रा जिवणी री फिकर ही अर सगळ-खड रो राज हो। उण सगळा न दुनियां दाव पर लगाय दियो अर दुरजोधन न सांची सल्ला दी। वो सोचण लाग्यो—वाह, अब तो भारत री राज म्हारै सिर पर इज समझो पाडवा रो सत्यानास कर न्हाखू। पण जिण न रामजी राखै उणन कोई नी चाख। दुरजोधन मारग मे किसन मिळग्या। उणा पछयो—दुरजोधन, कठै तो राजी

रह्यो है, इसी काई बात है ?' दुरजोधन मूछ्या ताण'र बोल्यो 'त्रिसण, थे म्हन घणा दिना ताई जाळ में फसायो, पण श्रब म्हू इसी जगे जाय रह्यो हू, जठ थारो कोई दाव नी लागला। धमराज पोत म्हन सलाह बताई है।' भगवान त्रिसण सो घणा चतर हा। उणा सोच्यो—एक तो ना'र श्रर फर उणर पाग्या श्राय जावै तो परडै इज कर नाख। त्रिसण बोल्या—श्र मूरख, माता र सामन एकदम नागो होय नै मत जाइज। कठैई उणे श्राख्या वद करली तो सगळो रापटरोळ व्है जावला। कैवत है कै 'विनास काळे विपरीत बुद्धि।' दुरजोधन र त्रिसण री बात श्रगोश्रग लागी। उण कह्यो—'श्राप ठीक फरमाय रह्या हो। त्रिसण बोल्या—'ल, श्रा कमळ र फूला री माळा लेजा।' इणन पर'र माता र सामन जाइज।' दुरजोधन माता गाधारी र कनै गयो श्रर श्रापरा सरीर पर निजर फेरण री श्ररदास करी। माता गाधारी बोली—बेटा म्हारी निजर में काई करामात है, म्हन इणरो पतो नी थू कव तो निजर फेर दू।' यू कय न गाधारी दुरजोधन र सगळा सरीर पर निजर नाखी। पगत गुप्त श्रग जिको माळा सू ढकयोडो हो उणन छाड'र सगळो सरीर वजर रो वणग्यो। गाधारी बोली—

देख वह नटवर तुम्हे फूलों की माला दे गया।
जिंदगी के फूल तेरे, आज चुन कर ले गया॥
मेरा क्या है दोष इसमें, मैं तो सच्ची रह गई।
पर जिस जगह पर्दा किया, वह जगह कच्ची रह गई॥

श्रो है सत रै जीवण में सुळगतो श्राचरण। जीवण मे जिण वसत सत श्राव तो मानख वारला स्वारथ, लोभ श्रर भय न

छोड़ देव अर सत रै लार जिंदगी, धन, माल अर दुनियां म इ लाग मार देव है। सतवादी मरदां जग्या सूं मिटग वाळा जग अर औरत न एक पलक में छोड देव। वेदव्यासजी सत री म'मा बतावतां कह्यौ है—

> अश्वमेध सहस्राणि, सत्यं च तुलया धृतम्।
> अश्वमेध सहस्राद्धि, सत्यमेव विशिष्यते॥

नापड़ा र एक पलड़ा म एक हजार अश्वमेधां री [illegible] दूजोड़ा पलड़ा में एकला सत न राखणौ छांव [illegible] व्हैला।

इण वास्ते हज रिषि, मुनि, साध अर [illegible] बन बन भटकता थका नागा भूखा रह्या, [illegible] तीर्थां सहन कीवी अर छेवट जो सत रा [illegible] पर कायम रह्या।

एक साधारण मिनख न जिको [illegible] न उणरा दरसण नी व्है, आ बात [illegible] पाळ अर पात र भेद सूं मन में [illegible] मन न असत नी कह्यो जा सक। [illegible] दोरो है। सत धरमी मिनख [illegible] सूं अट नूं मिळ उठा सूं इज मत [illegible] अमुक पोथ्यां या अमुक [illegible] री [illegible] भर। यो तो न्यारा न्यारा [illegible] खोजयोड़ा भाल भात रा सत [illegible] मत रा जोर सूं पाना री [illegible]

वो राग द्वेस सूं आघो व्हैतो जाय, मानव्या न सत र नड़ो लायण री कोसिस करतो जावै। सत री उपासना रो सही तरीको श्रो इज है के इणसूं मिनख अमरता कांनी आग वध।

जे आपा ई सत री पगडाडो पर चालां तो आपां रो जीवण इमरत सूं पूरण व्है जाव सांतिदायक श्रर आणददायक बण जाव। भारतीय संस्कृति इणीज सत री उपासना सूं दुनिया न साती रो सदेस देवती रही है।

उम्मीद है के आप पण सत रूपी इमरत रो स्वाद चाख'र आपरा जीवण न सत रा आणद सूं पूरण बणावोला।

